Delhi Postal Regd. No. DL (C) - 01/1272/2021-23 R.N.I. No. 72014/99 Posted at LPC Delhi RMS, Delhi-6 Monday & Tuesday

अखिल भारतीय तेरापंथ टाइम्स

संघीय समाचारों का साप्ताहिक मुखपत्र

अर्हत् उवाच

तितिक्खं परमं णच्चा।

तितिक्षा मोक्ष का परम साधन है।

* * *

परिग्गहे णिविट्ठाणं,
वेरं तेसिं पवड्ढई।

जो परिग्रह के अर्जन, संरक्षण और भोग में रत हैं, उनका वैर बढ़ता है।

• नई दिल्ली • वर्ष 24 • अंक 42 • 24 -30 जुलाई, 2023 प्रत्येक सोमवार • प्रकाशन तिथि : 22-07-2023 • पेज : 12 • ₹ 10

मुंबईवासियों ने 'उत्कर्ष' रूपी आध्यात्मिक भेंट श्रीचरणों में की समर्पित

आध्यात्मिक उत्कर्ष में आगे बढ़ने का हो प्रयास : आचार्यश्री महाश्रमण

मीरा रोड (ईस्ट), मुंबई, १६ जुलाई, २०२३

महानगरी मुंबई पर महत्ती कृपा कर आचार्यश्री महाश्रमण जी ने वर्ष २०१६ में मर्यादा महोत्सव के अवसर पर मुंबई में वर्ष २०२३ के चातुर्मास की घोषणा करवाई थी और उसी दिन से मानो मुंबई का श्रावक समाज एवं मुंबई में विराजित चारित्रात्माओं के मन में अनन्य उत्साह था और उत्साह हो भी क्यों नहीं?

जैन श्वेतांबर तेरापंथ धर्मसंघ के आचार्यों में से ६८ वर्षों के बाद आचार्यश्री महाश्रमण जी मुंबई की धरा पर चातुर्मास करने के लिए पधारने वाले थे। गुरु सन्निधि प्राप्त होना कोई मामूली बात नहीं है, वह पर्याय है आत्मा के उत्कर्ष का। अतः मुंबई का श्रावक समाज इस अति दुर्लभ अवसर का भरपूर लाभ उठाने के लिए तत्पर बना।

प्रेरणा मिली धर्मसंघ के विशिष्ट संत, आगम मनीषी, बहुश्रुत परिषद के संयोजक मुनिश्री महेंद्र कुमार जी सहित मुनिवृंद एवं मुंबई में विराजित चारित्रात्माओं की, इसी का परिणाम था कि मुंबई का विरार श्रावक समाज जुट गया। पूज्यप्रवर को आध्यात्मिक भेंट देकर, आध्यात्मिक स्वागत करने की तैयारी में और इसी तैयारी के रूप में ६ रंगी उत्कर्ष की परिकल्पना बनी। श्री जैन श्वेतांबर तेरापंथी सभा, मुंबई के तत्त्वावधान में एक अनूठा उपक्रम 'उत्कर्ष' दिसंबर, २०१६ से मार्च, २०२३ तक चला।

उत्कर्ष कार्यक्रम से जुड़े लोगों ने विभिन्न रूपों में दी प्रस्तुति

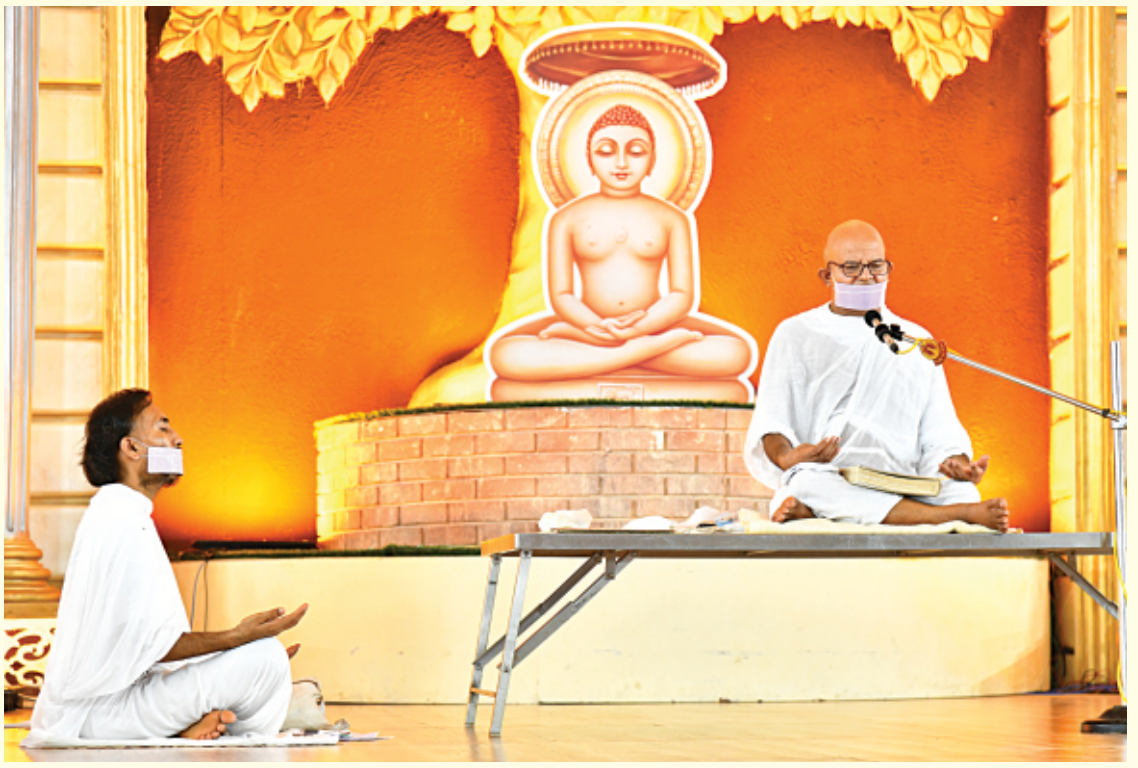

आचार्यश्री के समक्ष उत्कर्ष आयोजन की प्रस्तुति दी गई। इस प्रस्तुति में चातुर्मास प्रवास व्यवस्था समिति, मुंबई के अध्यक्ष मदनलाल तातेड़ एवं उत्कर्ष के संयोजक रतन सियाल व नरेंद्र तातेड़ ने अपनी अभिव्यक्ति दी। 'उत्कर्ष परिणाम और प्रभाव' नामक वीडियो प्रस्तुत किया गया। महिलाओं द्वारा परिसंवाद तथा उत्कर्ष से जुड़े सदस्यों ने गीत की प्रस्तुति दी। मुनि सिद्धकुमार जी ने उत्कर्ष विषय में अवगति प्रस्तुत की।

आचार्यश्री ने इस कार्यक्रम को आध्यात्मिक पाथेय प्रदान करते हुए कहा कि उत्कर्ष अनेक रूपों में हो सकता है। उत्कर्ष भौतिक और आध्यात्मिक रूप में भी हो सकता है। परम उत्कर्ष तो सिद्धत्व की प्राप्ति होती है। इस कार्यक्रम से जुड़ी सभी संस्थाएँ आध्यात्मिक-धार्मिक गतिविधियों में अपना योगदान देते रहें। आचार्यश्री ने मुनिश्री महेंद्र कुमार जी का स्मरण करते हुए अध्यात्म की दिशा में उत्कर्ष प्राप्त करने की प्रेरणा प्रदान की।

उत्कर्ष के नौ कार्यों को नौ रंगों के माध्यम से जोड़ा गया था तो इससे जुड़ी नौ मनके की माला साध्वी चंदनबाला जी आदि साध्वीवृंद द्वारा बनाई गई थी, जिसे उत्कर्ष से जुड़े चारित्रात्माओं के निवेदन पर मुख्य मुनिश्री ने आचार्यश्री को समर्पित की तो आचार्यश्री ने वह माला मुख्य मुनिश्री के गले में डालकर स्नेहाशीष प्रदान किया। यह दृश्य उपस्थित श्रद्धालुओं को भावविभोर करने वाला था। इस दृश्य को अपनी आँखों से देखकर जनता ने बुलंद स्वर में जयघोष किया।

उत्कर्ष की संक्षिप्त झलकी

मुंबई के प्रत्येक क्षेत्र को जोड़ते हुए ६ जॉन का विभाजन हुआ एवं तेरापंथ समाज के प्रत्येक परिवार को इस आध्यात्मिक उत्कर्ष में जोड़ने का प्रयास किया गया।

उत्कर्ष कार्यक्रम में ४८०७ व्यक्तियों ने अपनी सहभागिता दर्ज की।

कार्यक्रम से पूर्व आचार्यप्रवर ने आज चतुर्दशी के अवसर पर उपस्थित साधु-साध्वियों को प्रेरणा प्रदान की तथा हाजरी का वाचन किया।

साध्वीप्रमुखाश्री विश्रुतविभा जी ने भी अपने उद्‌बोधन से जनता को प्रेरणा प्रदान की।

- बैंगनी उत्कर्ष : आचार्यश्री भिक्षु के सिद्धांत
- हरित उत्कर्ष : अणुव्रत, जीवन विज्ञान
- नील उत्कर्ष : ज्ञानशाला
- पद्म उत्कर्ष : उपासक श्रेणी
- गुलाबी उत्कर्ष : जैन सिद्धांत दीपिका
- तेजस उत्कर्ष : प्रेक्षाध्यान
- स्वर्ण उत्कर्ष : संसारपक्षीय न्यातीला परिवार (यह उत्कर्ष उनको समर्पित किया गया जो धर्मसंघ की श्रीवृद्धि में अनन्य सहायक रहे हैं।)
- शुक्ल उत्कर्ष : व्रत दीक्षा
- रजत उत्कर्ष : सुमंगल साधना, श्रमणोपासक की ११ प्रतिमाएँ

अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स
24 - 30 जुलाई, 2023

✦ आत्मकल्याण के दो ही साधन हैं–संवर और निर्जरा।
—आचार्यश्री महाश्रमण

त्रिदिवसीय उपासक सेमिनार का पूज्यप्रवर की पावन सन्निधि में हुआ मंगल शुभारंभ

सभी पदों में श्रेष्ठ पद है श्रावक का पद : आचार्यश्री महाश्रमण

नंदनवन (मुंबई), १५ जुलाई, २०२३

मोहमयी नगरी, मुंबई के नंदनवन परिवार में महातपस्वी युगप्रधान आचार्यश्री महाश्रमण जी के पावन सान्निध्य में त्रिदिवसीय राष्ट्रीय उपासक सेमिनार का शुभारंभ हुआ। प्राकृतिक सौंदर्य से भरपूर इस रमणीय स्थान पर आयोजित सेमिनार में देशभर से समागत उपासक-उपासिकाओं ने बड़े उत्साह के साथ भाग लिया।

पूज्य आचार्यश्री महाश्रमण जी ने मार्मिक एवं प्रेरणास्पद उद्बोधन देते हुए फरमाया कि जैन आगम भगवती सूत्र में दस प्रकार की लब्धि का उल्लेख आता है–(१) ज्ञान लब्धि, (२) दर्शन लब्धि, (३) चारित्र लब्धि, (४) चरित्राचरित्र लब्धि, (५) दान लब्धि, (६) लाभ लब्धि, (७) भोग लब्धि, (८) उपभोग लब्धि, (९) वीर्य लब्धि और (१०) इंद्रिय लब्धि।

ये दसों लब्धियाँ भौतिक लब्धियाँ नहीं हैं। इनका जुड़ाव चेतना की निर्मलता से है। ये चार घनघाति कर्मों के विलय से जुड़ी हुई हैं। ज्ञान लब्धि सबमें समान नहीं होती। कुछ लोग प्रखर ज्ञानी होते हैं। कुछ मध्यम ज्ञानी होते हैं। कुछ लोगों में ज्ञान की अल्पता भी हो सकती है। किसी की स्मृति शक्ति प्रखर होती है। किसी की स्मृति शक्ति कमजोर हो सकती है। समझ शक्ति भी सबकी अलग-अलग होती है। कइयों में ज्ञान तो बहुत होता है, लेकिन दूसरों को समझाने की कला इतनी अच्छी नहीं होती। वहीं कुछ लोग समझाने की कला में प्रवीण होते हैं। बौद्धिक कला का विकास ज्ञानावरणीय कर्म के क्षयोपशम से होता है। इसके लिए हमें ज्ञान और बुद्धि का सम्मान करना चाहिए। ज्ञान की अवज्ञा, अवहेलना, असम्मान करना अच्छा नहीं होता है। इससे ज्ञानावरणीय कर्म का बंध होता है।

दूसरी लब्धि है दर्शन लब्धि। जिसका सम्यक्त्व पुष्ट होता है, उसकी दर्शन लब्धि पुष्ट होती है। कोई मिथ्यादृष्टि होता है, उसकी दर्शन लब्धि कम मात्रा में होती है। तीसरी लब्धि है चारित्र लब्धि यह केवल साधुओं को प्राप्त होती है। चौथी लब्धि का नाम है–चरित्राचरित्र लब्धि। यह लब्धि केवल श्रावकों में होती है। श्रावक बनना भी महत्त्वपूर्ण होता है। किसी आदमी को कोई पद प्राप्त होता है वह किसी संस्था में अध्यक्ष पद प्राप्त करता है तो किसी संस्था में उपाध्यक्ष पद या मंत्री पद भी प्राप्त कर सकता है। लेकिन ये पद स्थायी नहीं होते। ये पद कभी भी जा सकते हैं, लेकिन श्रावक का पद कभी जाता नहीं है। वह स्थायी होता है। उसे कोई छिन नहीं सकता। श्रावक की लब्धि जीवन भर बनी रह सकती है। इसलिए कहा जा सकता है कि श्रावक का पद सभी पदों में श्रेष्ठ पद है। कुछ-कुछ श्रावक तो चारित्रात्माओं के माँ-बाप तुल्य होते हैं। वे साधु-संतों का बहुत ध्यान रखते हैं। वे साधु-संतों को भोजन, दवाई, वस्त्र आदि का दान देते हैं। सुपात्र दान देकर श्रावक साधु के संयम की सुरक्षा में सहयोगी बन सकता है।

पूज्यप्रवर ने दान लब्धि, लाभ लब्धि, भोग, उपभोग और वीर्य लब्धि के विषय में विस्तार से विश्लेषण किया। दसवीं लब्धि इंद्रिय लब्धि की विवेचना करते हुए पूज्यप्रवर ने फरमाया कि हमें पाँचों इंद्रियाँ प्राप्त हुई हैं, यह बहुत बड़ा सौभाग्य है। कई ऐसे जीव हैं, जिन्हें केवल एक इंद्रिय-स्पर्शनेंद्रिय ही प्राप्त है। कई जीवों को केवल दो-तीन या चार इंद्रियाँ ही प्राप्त हैं। मनुष्य पंचेन्द्रिय प्राणी है। पाँच इंद्रियाँ प्राप्त होने के कारण ही मनुष्य इतना विकास कर पाया है। कभी कोई एक इंद्रिय पूर्ण शक्तिवान नहीं होती है, तो जीवन में बाधा उत्पन्न होती है। पाँचों इंद्रियाँ पूर्ण विकसित अवस्था में प्राप्त होना यह विशेष उपलब्धि की बात होती है।

पूज्य आचार्यप्रवर ने कालू यशोविलास (पूज्य गुरुदेवश्री तुलसी की कृति) का मारवाड़ी शैली में रोचक व्याख्यान फरमाया। जैन विश्व भारती द्वारा प्रकाशित मुनि हेमराजजी की आत्मकथा 'गुरुकृपा' का लोकार्पण जैविभा एवं मुंबई चातुर्मास प्रवास व्यवस्था समिति द्वारा किया गया।

साध्वीवर्या सम्बुद्धयशा जी ने महत्त्वपूर्ण उद्बोधन में कहा कि आज दुनिया में असत्य का पाप बहुत पल रहा है। बाकी सारे पाप एक तरफ और असत्य का पाप एक तरफ। अहिंसा की सुरक्षा के लिए मृषावाद-असत्य का त्याग बहुत जरूरी है। जो व्यक्ति परम पद को प्राप्त करना चाहता है उसे मृषावाद से अवश्य बचना चाहिए।

मुनि दिनेश कुमार जी ने प्राग् उद्बोधन में इलाची कुमार की कथा के माध्यम से अनासक्त चेतना के विकास की प्रेरणा दी। मुनि गौरव कुमार जी ने १६ की तपस्या का एवं मुनि जयेश कुमार जी व अनुशासन कुमार जी ने १५ की तपस्या का प्रत्याख्यान किया। प्रातःकालीन प्रवचन कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेश कुमार जी ने किया।

साधना से मोहनीय कर्मों को क्षीण करें : आचार्यश्री महाश्रमण

नंदनवन, मुंबई, १३ जुलाई, २०२३

चिर युवा मनीषी आचार्यश्री महाश्रमण जी ने भगवती सूत्र के आठवें शतक की विवेचना करते हुए फरमाया कि दो शब्द हैं–छद्मस्थ और केवली। तत्त्व-ज्ञान में ये दो शब्द प्रसिद्ध हैं। इनका संदर्भ ज्ञान के साथ जुड़ा हुआ है। जिसका ज्ञानावरणीय कर्म क्षीण नहीं हुआ है, वह छद्मस्थ है। ज्ञानावरणीय कर्म का क्षय होने से वह वीतराग है। केवलज्ञान दोनों में भेद रेखा डालता है।

छद्मस्थ व्यक्ति चार प्रकार के होते हैं–(१) जिनके पास मति, श्रुत ज्ञान है, (२) जिनके पास अवधि ज्ञान भी हो गया, (३) जिनके पास अवधि ज्ञान तो नहीं पर मनः पर्यव ज्ञान हो गया, (४) जिनके पास मति, श्रुत, अवधि और मनः पर्यव ज्ञान है।

दस चीजें ऐसी हैं, जिनको छद्मस्थ सर्वभावेण नहीं जान सकता–धर्मास्तिकाय, अधर्मास्तिकाय, आकाशास्तिकाय, शरीर मुक्त जीवन सिद्ध भगवान, परमाणु पुद्गल, शब्दः साक्षात रूप से, गंध साक्षात् रूप से, वायु साक्षात रूप से, यह जीव जिन होगा या नहीं, यह जीव सर्वदुखों का अंत करेगा या नहीं अथवा भवी है या अभवी। केवली इन चीजों को जान सकते हैं, पर छद्मस्थ साधारण आदमी नहीं।

केवलज्ञान ज्ञानावरणीय कर्म के क्षय से प्राप्त होता है, पर उसके लिए उत्कृष्ट साधना चाहिए, पहले मोहनीय कर्म का क्षय करो। वीतराग बने केवल केवलज्ञान की पात्रता है ही नहीं। वीतरागता आते ही ज्ञानावरणीय कर्म क्षीण करना आसान हो जाता है। आठ कर्मों में एक मोहनीय कर्म ही ऐसा है कि इसके योग से आत्मा के पाप कर्म का बंध होता है। राग और द्वेष कर्म के बीज हैं। राग-द्वेष और मोहनीय कर्म एक-दूसरे में समाविष्ट हो जाते हैं।

मोहनीय कर्म की २८ प्रकृतियाँ होती हैं, इनकी क्षीणता करना वीरता का काम है। क्षायिक सम्यक्त्व के लिए दर्शन मोहनीय और चारित्र मोहनीय की प्रवृत्तियों को क्षीण करना होता है। हमें मोहनीय कर्म को क्षीण करने के लिए साधना करनी चाहिए। इसके लिए चार कषाय–क्रोध, मान, माया और लोभ कम करना चाहिए।

गृहस्थ उम्र के साथ टर्निंग पॉइंट लें। अध्यात्म की साधना में अधिक समय लगाएँ। आगे की तैयारी भी करें। समाज के लिए धार्मिक आध्यात्मिक सेवा के लिए समय निकालें। जीवन को हम कई भागों में बाँट सकते हैं–बचपन, जवानी, ६५-७० की अवस्था और ८०-८५ की अवस्था। आचार्यों की सेवा-दर्शन करने से मोहनीय कर्म प्रतनूं पड़ सकता है।

परम पावन ने कालू यशोविलास की सुमधुर व्याख्या करते हुए पूज्य कालूगणी के जोधपुर चतुर्मास प्रवेश के समय के दृश्यों का साक्षात्कार करवाया।

व्यवस्था समिति द्वारा पावस प्रवास पुस्तिका एवं चतुर्मास की फड़द पूज्यप्रवर को समर्पित की गई। पूज्यप्रवर ने आशीर्वचन फरमाया। २१ रंगी तपस्या के संभागी नए-पुराने को पूज्यप्रवर ने प्रत्याख्यान करवाए। अन्य तपस्वियों ने भी प्रत्याख्यान ग्रहण किए।

कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेश कुमार जी ने किया।

अहिंसा की दृष्टि से सदा जागरूक रहें : आचार्यश्री महाश्रमण

नंदनवन (मुंबई),
१२ जुलाई, २०२३

वीतराग वाणी के व्याख्याता आचार्यश्री महाश्रमण जी ने भगवती सूत्र के सातवें शतक के दसवें उद्देशक की व्याख्या करते हुए फरमाया कि कालोदायी अणगार ने भगवान से अग्निकाय के बारे में प्रश्न किया। एक पुरुष अग्निकाय को प्रज्ज्वलित करता है, दूसरा उसको बुझाने का कार्य करता है। इनमें ज्यादा पाप कर्म करने वाला कौन और अल्प पाप कर्म करने वाला कौन पुरुष है।

भगवान ने फरमाया कि इन दोनों में जो पुरुष अग्निकाय को प्रज्ज्वलित करता है, वह ज्यादा महापाप कर्म वाला और जो बुझाने वाला है, वह कम पाप कर्म करने वाला होता है। कालोदयी ने इसका कारण पूछा तो भगवान ने फरमाया कि अग्निकाय प्रज्ज्वलित करने वाला पृथ्वीकाय, अपकाय, तेजसकाय, वायुकाय, वनस्पतिकाय और त्रसकाय की अधिक हिंसा करने वाला होता है, जबकि बुझाने वाला कम वेदना देता है।

अग्नि को जलाने व बुझाने में हिंसा का अंतर है। कारण अग्नि जलती रहेगी तो उसमें कई जीवों की हिंसा होती रहेगी। बुझाने से हिंसा का अल्पीकरण हो जाता है। गृहस्थों के जीवन में अग्नि का उपयोग होता है, पर ध्यान दें कि अनावश्यक हिंसा न हो। अन्य जीवों की भी हिंसा कम हो। अग्निकाय हिंसा का स्थान बन सकता है। छोटी-छोटी बातों पर हम ध्यान दें तो हिंसा से अहिंसा के मार्ग पर आ सकते हैं। अग्नि, पृथ्वी, जल, वायु एवं वनस्पति आदि से भी अनावश्यक हिंसा न होने पाए। इसके लिए अहिंसा की दृष्टि से हमेशा जागरूक रहने का प्रयास करें।

कालू यशोविलास का सुमधुर सुंदर विवेचन करते हुए परम पुरुष ने पूज्य कालूगणी के जोधपुर चतुर्मास हेतु पधारते हुए मार्ग में जसोल, असाड़ा, कोरणा, परसते हुए जोधपुर पधारने की कृपा के प्रसंग को समझाया।

पूज्यप्रवर ने २१ रंगी तपस्या से जुड़े तपस्वियों को प्रत्याख्यान करवाए।

साध्वीवर्या सम्बुद्धयशा जी ने कहा कि आदमी का जीवन तीन प्रकार का होता है—(१) हिंसा का जीवन जीना, (२) पूर्ण रूप से अहिंसक जीवन जीना, (३) अल्पारंभ जीवन जीना। साधु तो पूर्णरूपेण अहिंसक होते हैं, पर गृहस्थ जीवन में आरंभ-संभारंभ चलता रहता है, पर उसमें भी गृहस्थ सीमा करें। हिंसा का अल्पीकरण करें। अनावश्यक हिंसा से बचें। आत्महत्या या भ्रूणहत्या जैसी हिंसा न हो।

कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेश कुमार जी ने किया।

संथारा आत्मा की उज्ज्वलता का सर्वोत्तम आधार

भीलवाड़ा।

मुनि पारस कुमार जी के सान्निध्य में संथारा क्यों और क्या विषय पर कार्यशाला का आयोजन जयाचार्य भवन में किया गया। मुनि सिद्धप्रज्ञ जी ने कहा कि संथारा अर्थात जीते जी मृत्यु के दर्शन करने की प्रक्रिया है। संथारे से एक ओर आत्मा की निर्मलता बढ़ती है, वहीं दूसरी ओर धर्म शासन की प्रभावना बढ़ती है। संथारा आत्महत्या नहीं, अपितु आत्मा से परमात्मा बनने का सर्वोत्तम साधन है। संथारा दो प्रकार का होता है। संथारी एवं याव्वजीवन। साधक को जब यह लगे कि शरीर साथ नहीं दे रहा है तो अब मैं क्यों शरीर का साथ दूँ इसी भावना की परिणीति है संथारा।

मुनि पारस कुमार जी ने कहा कि जैन धर्म में संथारा का बहुत बड़ा महत्त्व है। संथारा करना बहुत महान एवं कठिन काम है। यह श्रावक एवं साधुओं का अंतिम मनोरथ है। हमें हरदम जागरूक रहना चाहिए। अंत में संथारा साधक मुनि शांति प्रिय के संथारे के १५वें दिन उपासक विनोद बोरदिया ने संथारा साधक मुनिश्री का परिचय दिया।

कार्यशाला में सभा अध्यक्ष जसराज चोरड़िया, भिक्षु सेवा संस्थान मंत्री दिनेश गोखरू की उपस्थिति रही। रात्रि में मधुर गायक संजय भानावत विनीत भानावत, सुरेश बोरदिया, विमल बोरदिया, अशोक बाफना ने सुंदर गीतों की प्रस्तुति दी।

विशेष अनुष्ठान कार्यक्रम का आयोजन

सिवानी।

शासनश्री साध्वी कुंथुश्री जी के सान्निध्य में सभा के तत्त्वावधान में तेरापंथ भवन में भक्तामर स्तोत्र का विशेष अनुष्ठान कार्यक्रम आयोजित किया गया।

साध्वी सुलभयशा जी, साध्वी संबोधयशा जी ने ऋषभाय नमः स्तुति गीत से मंगलाचरण किया। साध्वी कुंथुश्री जी ने कहा कि भक्तामर स्तोत्र जैन परंपरा में सर्वमान्य स्तोत्र है। आचार्य मानतुंग ने विशेष परिस्थितियों में इसकी रचना की थी। यह भक्ति रस से आप्लावित है।

संसार में अनेक बाधाएँ हैं, विघ्न हैं, समस्याएँ हैं। उनका सामना करने के लिए मनोबल प्रबल होना चाहिए, बाधाओं को हटाने के लिए आलंब चाहिए। स्तोत्र। सभी परंपराओं में अनेक स्तोत्रों की रचना हुई है। उनके सहारे विघ्न-बाधाओं, समस्याओं को दूर किया गया। जैनों में भक्तामर एक शक्तिशाली स्तोत्र है। इसका प्रतिदिन पाठ करने से शक्ति, शांति की प्राप्ति होती है एवं आने वाली परिस्थितियों का भी समाधान किया जा सकता है।

साध्वी सुमंगलाश्री जी ने कार्यक्रम का संचालन किया, इसमें अध्यक्ष रतनलाल जैन, अमित जैन, संजीव जैन, तपस्वी गोकुल जैन आदि अनेक भाई-बहन उपस्थित हुए।

शपथ ग्रहण समारोह के आयोजन

पूर्वांचल-कोलकाता

तेयुप पूर्वांचल-कोलकाता के सत्र-२०२३-२४ के नव मनोनीत अध्यक्ष संदीप सेठिया एवं पदाधिकारियों तथा कार्यकारिणी समिति सदस्यों का शपथ ग्रहण समारोह साउथ कोलकाता कला मंदिर में मुनि जिनेश कुमार जी के सान्निध्य में आयोजित किया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ मुनिश्री के मुखारविंद से नमस्कार महामंत्र के साथ हुआ।

तत्पश्चात कोलकाता के ६ परिषद तेयुप, पूर्वांचल-कोलकाता, साउथ कोलकाता, टॉलीगंज, साउथ हावड़ा, लिलुआ एवं हिंदमोटर के निवर्तमान अध्यक्ष और नव मनोनीत अध्यक्ष के द्वारा विजय गीत का संगान किया गया।

अभातेयुप पूर्व अध्यक्ष रतन दुगड़ ने श्रावक निष्ठा पत्र का वाचन करवाया गया और सभी नव मनोनीत अध्यक्ष को पद और गोपनीयता की शपथ दिलाई गई। उसके बाद उनकी कार्यकारिणी टीम का सामूहिक रूप से शपथ ग्रहण हुआ। सभी परिषदों के अध्यक्षों ने नव गठित कार्यकारिणी की घोषणा करते हुए पदाधिकारियों के नामों की घोषणा की।

मुनि जिनेश कुमार जी ने सभी नव मनोनीत अध्यक्ष एवं उनकी टीम को प्रेरणा देते हुए शुभ एवं मंगलमय भविष्य के लिए आशीर्वाद प्रदान किया। शपथ ग्रहण कार्यक्रम का संचालन अभातेयुप पूर्व अध्यक्ष रतन दुगड़ के द्वारा किया गया।

राजाराजेश्वरी नगर

तेयुप का शपथ ग्रहण समारोह एवं दायित्व हस्तांतरण समारोह जैन संस्कार विधि से मुनि दीप कुमार जी के सान्निध्य में आयोजित किया गया। संस्कारक राकेश दुधोड़िया एवं दिनेश मरोठी ने विधि-विधान एवं मंत्रोच्चार से शपथ के कार्यक्रम को आगे बढ़ाया। मंगलाचरण का संगान राजेश भंसाली, विकास छाजेड़ एवं सुशील भंसाली द्वारा किया गया। तुलसी संगीत सुधा के सदस्यों द्वारा विजय गीत का संगान किया गया।

अभातेयुप के प्रबुद्ध विचारक दिनेश पोखरना द्वारा श्रावक निष्ठा पत्र का वाचन किया गया। निवर्तमान अध्यक्ष कौशल लोढ़ा ने नवमनोनीत अध्यक्ष विकास छाजेड़ को पद एवं गोपनीयता की शपथ दिलाई।

मुनिश्री ने तेयुप सदस्यों के पति आध्यात्मिक मंगलकामनाएँ दीं। आर०आर० नगर के सभा अध्यक्ष छतर सिंह सेठिया, ट्रस्ट अध्यक्ष मनोज डागा, महिला मंडल अध्यक्षा लता बाफना, विजयनगर सभा अध्यक्ष प्रकाश गांधी आदि अनेक जनों ने शुभकामनाएँ दी। इस अवसर पर अभातेयुप परिवार, तेयुप आर०आर० नगर के पूर्व अध्यक्ष, सभा, महिला मंडल, ज्ञानशाला, क्षेत्रीय तेयुप परिषद आदि की उपस्थिति रही। आभार ज्ञापन परिषद मंत्री धर्मेश नाहर द्वारा किया गया। इस कार्यक्रम का संचालन उपाध्यक्ष विक्रम मेहर ने किया।

गांधीनगर, बैंगलुरु

मुनि हिमांशु कुमार जी के सान्निध्य में तेयुप, बैंगलुरु की नव गठित टीम का दायित्व ग्रहण समारोह आयोजित किया गया।

निवर्तमान अध्यक्ष प्रदीप चोपड़ा ने सभी का स्वागत करते हुए विगत कार्यकाल के उल्लेखनीय आयामों का विवरण प्रस्तुत किया। जिसके बाद उन्होंने नव मनोनीत अध्यक्ष रजत बैद को पद एवं गोपनीयता की शपथ दिलाई। रजत बैद ने अपनी टीम की घोषणा कर उन्हें भी पद एवं गोपनीयता की शपथ दिलाई।

अपने विचार व्यक्त करते हुए नव मनोनीत अध्यक्ष रजत बैद ने सभी के सहयोग की कामना की, साथ ही तेमम एवं अणुव्रत समिति के नव नियुक्त पदाधिकारी एवं कार्यसमिति को शुभकामनाएँ संप्रेषित की।

मुनि हेमंत कुमार जी ने सभी संस्थाओं को सहयोग की भावना से कार्य करने की प्रेरणा दी। मुनि दीप कुमार जी ने परिषद द्वारा किए जा रहे आध्यात्मिक कार्यक्रमों की सराहना करते हुए और विकास करने की प्रेरणा दी।

मुनि हिमांशु कुमार जी ने उद्बोधन दिया। कार्यक्रम में विभिन्न संस्थाओं के पदाधिकारी, कार्यसमिति सदस्य एवं गणमान्य व्यक्ति उपस्थित थे। कार्यक्रम का संचालन विनय बैद ने किया।

आचार्य भिक्षु के जन्म दिवस एवं बोधि दिवस का कार्यक्रम

पेटलावद।

आचार्य भिक्षु एक महापुरुष हुए जिनके संयमी जीवन के स्मरण से हमारा हृदय प्रकाश से भर जाता है। उनका उच्च आचरण वाला जीवन हमारे लिए आदर्श रूप है। वे एकाभवतारी थे। आचार्य भिक्षु की वीतराग भगवान के प्रति गहरी आस्था थी।

उक्त उद्गार मुनि सुव्रत कुमार जी ने तेरापंथ धर्मसंघ के प्रथम गुरु महामना आचार्यश्री भिक्षु के २६८वें जन्म दिवस व बोधि दिवस पर तेरापंथ भवन में श्रावक-श्राविकाओं के समक्ष व्यक्त किए।

आपने कहा कि आचार्य भिक्षु एक ऐसे महापुरुष थे, जिन्होंने जीवन भर कठिनाइयों को सहन किया। वे जीवन भर साधना के द्वारा कर्म निर्जरा करते रहे।

आपने प्रासंगिक रूप में तेरापंथ धर्मसंघ के विशिष्ट श्रावक चंद रामपुरिा के जीवन का उल्लेख करते हुए कहा कि वे बैरिस्टर होते हुए भी विनम्र व गुणवान व्यक्तित्व वाले थे।

इस अवसर पर मुनि मंगलप्रकाश जी ने कहा कि आचार्य भिक्षु का हम सब पर महान उपकार है। हम सही तत्त्व को सही समझने का प्रयास करें। आपने मिथ्यात्व के दस बोलों का विश्लेषण किया साथ ही नरक गति के बारे में बताते हुए वहाँ दुखों का विश्लेषण भी किया। इस अवसर पर मुनि शुभम कुमार जी ने भी संबोधित किया। अनेक व्यक्तियों ने उपवास-एकासन के प्रत्याखान लिए।

✦ *व्यक्तियों के समूह से समाज का निर्माण होता है, इसलिए समाज व्यक्ति से बड़ा होता है। एक व्यक्ति के चिंतन की तुलना में समाज अथवा संगठन का चिंतन महत्त्वपूर्ण होता है।*

—आचार्यश्री महाश्रमण

महिला मंडल के विविध आयोजन

महिला मंडल शपथ ग्रहण समारोह

हैदराबाद।

तेरापंथ भवन में साध्वी डॉ० मंगलप्रज्ञा जी के सान्निध्य में तेरापंथ महिला मंडल, हैदराबाद का शपथ ग्रहण समारोह कार्यक्रम का प्रारंभ महिला मंडल के संकल्प गीत के साथ हुआ। निवर्तमान अध्यक्षा अनिता गिड़िया ने शुभकामनाएँ देते हुए अग्रिम अध्यक्षीय कार्यभार संभालने हेतु कविता आच्छा को अध्यक्षीय पद की शपथ दिलवाई।

नवनिर्वाचित अध्यक्ष ने अपनी कार्यकारिणी टीम को शपथ ग्रहण करवाई। नवनिर्वाचित अध्यक्षा ने अपने उद्‌गार व्यक्त किए।

शपथ ग्रहण समारोह का संयोजन कार्यकारिणी सदस्य प्रभा दुगड़ ने किया। तेरापंथ सभा, सिकंदराबाद के अध्यक्ष बाबूलाल बैद ने नव निर्वाचित अध्यक्षा को शुभकामनाएँ दी। तेयुप अध्यक्ष वीरेंद्र घोषल ने उद्‌गार व्यक्त किए।

इस अवसर पर साध्वी डॉ० मंगलप्रज्ञा जी ने कहा कि हर दिल और दिमाग में यह प्रश्न उठता है, समृद्धि किसे प्राप्त होती है? ऐश्वर्य किसे प्राप्त होता है? अध्यात्म जगत के प्रश्न को उत्तरित करते हुए कहा गया—गतिशील व्यति का ऐश्वर्य मित्र होता है। नव अध्यक्षा ने पदाधिकारियों एवं अन्य संयोजिकाओं की घोष्णा कर उन्हें पद व गोपनीयता की शपथ दिलाई।

क्षेत्रीय महिला सेमिनार का आयोजन

उधना।

तेमम, उधना द्वारा मुनि उदित कुमार जी के सान्निध्य में क्षेत्रीय महिला सेमिनार का आयोजन किया गया। जिसका विषय था—'सम्मुख है अब चातुर्मास'। धर्म आराधना का करें प्रयास। मुनि उदित कुमार जी स्वामी के नमस्कार महामंत्र के द्वारा कार्यक्रम की शुरुआत हुई। महिला मंडल की बहनों द्वारा मंगलाचरण किया गया। महिला मंडल अध्यक्षा सोनू बाफना द्वारा स्वागत वक्तव्य दिया गया। मुनि उदित कुमार जी ने बताया कि चातुर्मास सम्मुख है तो हमें ज्यादा से ज्यादा धर्म आराधना में जुड़कर अपनी आत्मा का कल्याण करना चाहिए। मुनिश्री ने कोटि जप अनुष्ठान, साप्ताहिक आध्यात्मिक अनुष्ठान, पच्चीस बोल प्रतिक्रमण प्रशिक्षण कार्यशाला एवं जैन विद्या कार्यशाला में जुड़ने के लिए सभी नारी शक्ति को प्रेरणा दी।

मुनिश्री ने चातुर्मास में होने वाली अलग-अलग साप्ताहिक प्रतियोगिता में भी भाग लेने के लिए सभी को प्रेरित किया एवं मुनिश्री ने महिलाओं को अलग-अलग जिज्ञासाओं का भी समाधान किया। कार्यक्रम में अभातेमम गुजरात प्रभारी श्रेया बाफना, महिला मंडल पदाधिकारी, कार्यकारिणी टीम एवं ८५ लगभग महिलाओं की उपस्थिति रही। कार्यक्रम का संचालन महिला मंडल मंत्री नीलम डांगी ने किया एवं कार्यक्रम का आभार स्वीटी बाफना ने किया।

शिल्पशाला कार्यशाला का आयोजन

तिरुपुर।

शिल्पशाला का आयोजन साध्वी डॉ० गवेषणाश्री जी के सान्निध्य में तिरुपुर महिला मंडल द्वारा किया गया। मंगलाचरण पूजा दुगड़ द्वारा किया गया। अध्यक्षा सीमा सामसुखा ने सभी का स्वागत किया। मंडल की बहनों ने प्रेरणा गीत का संगान किया।

साध्वी दक्षप्रभा जी ने सुमधुर गीत के माध्यम से हर परिस्थिति में समभाव रहने की प्रेरणा दी। साध्वी मयंकप्रभा जी ने बताया कि मौसम अनुकूल और प्रतिकूल नहीं होता हमारे भाव उन्हें अनुकूल और प्रतिकूल बनाते हैं। अगर हमारी सोच पॉजिटिव होती है तो हमारे जीवन में लचीलेपन का विकास होता है।

साध्वी डॉ० गवेषणाश्री जी ने कहा कि हमारा जीवन एक कुरुक्षेत्र है, उनसे बाहर निकलना बहुत मुश्किल है पर हमारे भीतर सामर्थ्य है, हमारे भीतर ज्ञान है, दर्शन है, आनंद है। बस दुख से सुख निकालने की कला हमको आनी चाहिए। सहन करो सफल बनो, श्रम करो सफल बनो, अपने आपको मोटिवेट करते रहो। अपना दृष्टिकोण सकारात्मक रखें। छोटी सोच पैरों की मोच जीवन में असफलता, बड़ी सोच जिंदगी में सुलता। कार्यक्रम का संचालन एवं आभार ज्ञापन मंत्री प्रीति भंडारी ने किया। बहनों की अच्छी उपस्थिति रही।

कार्यकर्ता सम्मान समारोह का आयोजन

हैदराबाद।

तेरापंथ महिला मंडल का कार्यकर्ता सम्मान समारोह डी०वी० कॉलोनी स्थित तेरापंथ भवन में आयोजित किया गया। कार्यक्रम की शुरुआत नमस्कार महामंत्र जिसे शांता बैद ने व प्रेरणा गीत मंडल सदस्यों ने गाया।

अध्यक्ष अनीता गिड़िया ने सभी का स्वागत-अभिनंदन किया। उन्होंने कहा कि तेरापंथ महिला मंडल एक धर्मनिष्ठ विशाल वटवृक्ष है, जिसकी प्रभावी सक्रियता, सेवा और समर्पण राष्ट्रीय अध्यक्ष नीलम सेठिया के नेतृत्व में गतिमान है।

कार्यकाल के दौरान किए गए सभी कार्यों के लिए सभी सदस्यों का अध्यक्ष अनिता गिडिया एवं मंत्री श्वेता सेठिया द्वारा उपहार से सम्मान किया गया। संरक्षिका विमलेश सिंघी ने अध्यक्ष, मंत्री द्वारा किए गए सभी कार्यों की प्रशंसा की। सम्मान समारोह का संचालन कोषाध्यक्ष शांता बैद ने कविता के माध्यम से किया। आभार ज्ञापन मंत्री श्वेता सेठिया ने किया।

कार्यक्रम में पदाधिकारीगण एवं अन्य गणमान्य जनों की उपस्थिति रही। अध्यक्षा ने नगर में विराजित साध्वी मंगलप्रज्ञा जी के चौमासे में सभी को दर्शन-सेवा का लाभ लेने की प्रेरणा दी।

पॉवरफुल लाइफ स्टाइल बनाए

राजनगर, भिक्षु बोधि स्थल।

डॉ० साध्वी परमयशा जी के सान्निध्य में 'पॉवरफुल लाइफ स्टाइल' की कार्यशाला का आयोजन हुआ।

डॉ० साध्वी परमयशा जी ने कहा कि माता-पिता से बढ़कर कोई भगवान नहीं। उनका ऋण कोई चुका पाए इतना कोई धनवान नहीं। नई पीढ़ी अपने दायित्व को समझे। साध्वीश्री जी ने कहा कि सफलता आसमान से नहीं उतरती। धरती से नहीं निकलती। जीरो से हीरो बनने के लिए प्रेक्षा मेडिटेशन का ५ मिनट का पैकेज अपने साथ रखें। जीवन फुलवारी को महकाने के लिए हमेशा कॉन्फिडेंट रहें। ज्ञानमुद्रा-महाप्राण ध्वनि, ज्ञान केंद्र पर पीले रंग का ध्यान करें। 'ॐ णमो णाणस्स'—ये ऐसे शक्तिशाली प्रकल्प हैं जो हमारे आई०क्यू०, ई०क्यू०, पी०क्यू०, एस०क्यू० को पॉवरफुल बनाते हैं।

डॉ० साध्वी परमयशा जी, साध्वी विनम्रयशा जी, साध्वी मुक्ताप्रभा जी और साध्वी कुमुदप्रभा जी ने गीत का संगान किया।

आचार्यश्री महाप्रज्ञ जी का १०४वाँ जन्म दिवस प्रज्ञा दिवस के रूप में मनाया

सिकंदराबाद।

टेक्स्ट बुक कॉलोनी में तेरापंथ सभा, सिकंदराबाद के तत्त्वावधान में आचार्यश्री महाप्रज्ञ जी का १०४वाँ जन्मोत्सव साध्वी डॉ० मंगलप्रज्ञा जी के सानिनध्य में मनाया गया। 'अभिवंदना-प्रज्ञा के महासूर्य की' विषय पर साध्वीश्री जी ने कहा कि आचार्यश्री महाप्रज्ञ जी की अज्ञ से महाप्रज्ञ तक की यात्रा अद्‌भुत, प्रेरक और प्रणम्य है। वे महान् समाधिपुरुष और समाधिप्रदाता विशिष्ट पुरुष थे। उनका व्यक्तित्व पुरुषार्थ, समर्पण, विवेक, प्रबुद्धता और शांति की गाथाओं से संपृक्त है। वे समर्पण के पुरोधा पुरुष थे। उन्होंने हर मन को अपने करुणा रस से आप्लावित किया। लाखों-करोड़ों व्यक्तियों की समस्याओं को समाहित कर सुख, शांति और आनंद की सौगात दी।

साध्वी डॉ० मंगलप्रज्ञा जी ने कहा कि आवश्यकता है उस विराट व्यक्तित्व के गुणों को हम जीने का प्रयास करें। विनम्रता के भावों को पुष्ट करके परिवार और समाज में शांत सहवास बनाने का प्रयास करें।

ज्ञानशाला के ज्ञानार्थियों के महाप्रज्ञ अष्टकम की प्रस्तुति से कार्यक्रम प्रारंभ हुआ। ज्ञानशाला प्रशिक्षिकाओं ने 'महाप्रज्ञ जीवन दर्शन की मनभावन प्रस्तुति दी। तेयुप के अध्यक्ष वीरेंद्र घोषल, महिला मंडल अध्यक्ष अनिता गिरिया, अणुव्रत समिति के अध्यक्ष प्रकाश भंडारी, तेरापंथ सभा के अध्यक्ष बाबूलाल बैद ने श्रद्धामय अभिव्यक्ति दी।

महिला मंडल द्वारा सास-बहू ग्रुप संगान प्रस्तुत किया। तेरापंथ सभा पूर्व अध्यक्ष करणीसिंह बरड़िया ने साध्वीवृंद, मंच एवं समस्त परिषद का स्वागत किया। राजकुमार सुराणा ने अभिवंदना स्वरूप भावों की प्रस्तुति दी। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि परिषद के सदस्य पदमचंद पटावरी ने श्रद्धासिक्त विचारों में कहा कि आचार्य महाप्रज्ञ जी की शासना उच्च काटि की थी।

साध्वी सुदर्शनप्रभा जी, साध्वी सिद्धियशा जी, साध्वी राजुलप्रभा जी, साध्वी चैतन्यप्रभा जी एवं साध्वी शौर्यप्रभा जी ने समूह संगान किया। साध्वी चैतन्यप्रभा जी ने कहा कि आचार्यश्री महाप्रज्ञ जी एक ऐसे साधक पुरुष एवं योगी थे। जिन्होंने हमेशा अध्यात्म का अजस्र स्रोत बहाया। कार्यक्रम का संचालन साध्वी सुदर्शनप्रभा जी ने किया।

शपथ ग्रहण समारोह का आयोजन

सुनाम।

साध्वी कनकरेखा जी, साध्वी हेमंतप्रभा जी सह 'दायित्व बोध समारोह' का आयोजन हर्षोल्लास के साथ संपन्न हुआ। ईस्ट स्तुति के साथ साध्वीश्री जी ने कार्यक्रम का शुभारंभ किया।

साध्वी कनकरेखा जी ने कहा कि आज तेयुप, सुनाम एवं तेमम का शपथ ग्रहण समारोह समाहित किया गया। सर्वसम्मति से नवनिर्वाचित सदस्यों ने बड़े ही उत्साह के साथ धर्मसंघ की सेवा का दायित्व संभाला। युवा सेनानी शक्ति के स्त्रोत हैं, देश की धड़कन है। वह चाहे तो स्वयं के साथ परिवार, समाज व राष्ट्र का सुंदर निर्माण कर सकता है।

प्रत्येक सदस्य अपने दायित्व के साथ चरित्रशील, श्रमशील, श्रद्धाशील रहते हुए अभातेयुप द्वारा निर्देशित सेवा-संस्कार व संगठन के कार्य में गतिशील रहे। नवनिर्वाचित तेयुप अध्यक्ष अरिहंत गोयल को अपनी टीम के साथ कार्यकाल की सफलता के लिए आध्यात्मिक शुभकामना।

कार्यक्रम के दूसरे चरण में महिला मंडल तेरापंथ की गतिविधियों से परिचित करवाते हुए साध्वी कनकरेखा जी ने कहा कि तेरापंथ के नवमाधिशास्ता गुरुदेव तुलसी ने नारी समाज को विकास का खुला प्लेटफार्म दिया। अभातेमम की संपूर्ण देशभर में शाखाएँ विकास के नए-नए स्वस्तिक कर रही हैं।

महासभा कार्यकारिणी सदस्य केवलकृष्ण गोयल व मुख्य अतिथि अग्रवाल सभा अध्यक्ष हकुमत राय जैन ने तेयुप व महिला मंडल को शपथ दिलाकर अपने दायित्व का अहसास करवाया। साध्वी गुणप्रेक्षा जी ने अपने विचार रखे। इस अवसर पर तेयुप एवं महिला मंडल अध्यक्ष ने अपनी-अपनी टीम की घोषणा की। परिषद व मंडल की सुमधुर गीत से पूरे प्रांगण में ॐ अर्हम् की ध्वनि गुंजने लगी। मंच का संचालन तेयुप सहमंत्री हितेश जैन ने किया।

अनुपम आभा से आभामंडित व्यक्तित्व का नाम है-गुरुदेव तुलसी

कृष्णानगर, दिल्ली।

साध्वी अणिमाश्री जी के सान्निध्य में तेरापंथ भवन में गुरुदेव श्री तुलसी का २७वाँ महाप्रयाण दिवस तुलसी भक्तों की उपस्थिति में तप-जप एवं श्रद्धाभाव के साथ मनाया गया।

साध्वीश्री जी की प्रेरणा से दिल्ली महानगर में पहली बार १५५७ एकासन के द्वारा श्रावक-श्राविकाओं ने गुरुदेव तुलसी को तप का श्रद्धा अर्घ्य समर्पित किया। साध्वी अणिमाश्री जी ने कहा कि अनुपम आभा से आभामंडित एक विराट व्यक्तित्व का नाम है—गुरुदेव तुलसी। युवा दहलीज पर पाँ रखते ही जिसने शासन की बागड़ोर संभाली उस युवराजयोगी का नाम है—गुरुदेव तुलसी। गुरुदेव तुलसी ने अपनी सूझबूझ से धर्मसंघ को व्योमस्पर्शी ऊँचाइयाँ प्रदान की। जिनशासन के नक्शे में धुँधले से दिखाई देने वाले तेरापंथ को सूर्य की तरह तेजस्वी बना दिया। महान सृष्टा, महान सृजनहार, महान निर्माता गुरुदेव तुलसी को उन्हीं की कृतियों का श्रद्धासिक्त अभिवंदन।

साध्वीश्री जी ने कहा कि छब्बीस वर्षों में यह पहला महाप्रयाण दिवस है जहाँ हमारे सान्निध्य में पहली बार १५५७ एकासन हुए हैं। डॉ० साध्वी आरती ज्योति जी म०सा० ने कहा कि माँ की वह कोख धन्य होती है, जिस कोख से तुलसी जैसे कोहिनूर पैदा होते हैं। कोहिनूर की तरह अपनी साधना को चमकदार बनाया।

साध्वी कर्णिकाश्री जी ने संकल्प पुरुष के रूप में उनकी अभिवंदना करते हुए कहा कि आपके सपने हमारे संकल्प बनें, हम भी धर्मसंघ की प्रभावना करें।

डॉ० साध्वी सुधाप्रभा जी ने कहा कि आचार्य तुलसी प्रयोगधर्मा थे। अध्यात्म के विशिष्ट प्रयोक्ता थे। उन्होंने धर्मसंघ को प्रयोगों की नवीनतम प्रयोगशाला बनाया। साध्वी समत्वयशा जी ने सुमधुर गीत का संगान किया। साध्वी मैत्रीप्रभा जी ने मंच का संचालन किया। गांधीनगर सभाध्यक्ष कमल गांधी, शाहदरा सभा अध्यक्ष पन्नालाल बैद, दिल्ली सभा के उपाध्यक्ष सुभाष सेठिया, गाजियाबाद सभा के सहमंत्री ललित डागा, तेयुप अध्यक्ष विकास सुराणा, विकास मंच के महामंत्री महेंद्र श्यामसुखा, डॉ० कुसुम लुणिया ने अपने भावों की अभिव्यक्ति दी।

ज्ञानशाला के बच्चों ने मोहक प्रस्तुति दी। महिला मंडल ने सुमधुर गीत के द्वारा मंगल संगान किया। अनेक संस्थाओं के पदाधिकारियों सहित श्रावक-श्राविका समाज की सहभागिता रही।

दो धाराओं का आध्यात्मिक मिलन

सिकंदराबाद।

मारडपल्ली सिकंदराबाद स्थित देवेंद्र नाहटा एवं गौतमचंद गुगलिया के निवास स्थान पर श्रमण संघ के आचार्यश्री शिवमुनिजी के प्रबुद्ध शिष्य युवाचार्य श्री महेंद्र ऋषिजी एवं साध्वी मंगलप्रज्ञा जी का आध्यात्मिक मिलन हुआ। आचार्यश्री महेंद्र ऋषिजी एवं साध्वी डॉ० मंगलप्रज्ञा जी के मध्य विविध विषयों पर वार्ता हुई। वार्तालाप के दौरान युवाचार्य महेंद्र ऋषिजी ने कहा कि हमारा तेरापंथ संघ के साथ आत्मीय भाव जुड़ा हुआ है। श्रमण संघ एवं तेरापंथ के आचार्यों ने आने वाले समय के लिए माइलस्टोन तैयार कर दिया है।

दोनों परंपराओं में कहीं कोई आग्रह नहीं है। यह संपूर्ण जगत के लिए प्रेरणा है। साध्वी डॉ० मंगलप्रज्ञा जी ने कहा कि अपनी परंपराओं को छोड़ना मुश्किल है, अपना-अपना विजन है पर चिंतनपूर्वक उदारता के साथ आचार्यश्री महाश्रमण जी ने जैन एकता की दृष्टि से जैनों का मुख्य पर्व संवत्सरी सबसे एक ही दिन मनाने का प्रस्ताव रखा था। एकता के लिए महाश्रमण जी ने काफी श्रम किया है। आचार्यश्री महाश्रमण जी और श्रमण संघाचार्य श्री शिवमुनि जी ने आदर्श प्रस्तुत किया है।

यह आध्यात्मिक मिलन भी सकारात्मक, परिचायक, वात्सल्य भाव दर्शा रहा है। तेरापंथ सभा, सिकंदराबाद के मंत्री सुशील संचेती, विहार यात्रा टीम के सदस्य प्रेम बैंगानी, आसकरण सेठिया, प्रमोद भंडारी सहित अनेक गणमान्य जन उपस्थित थे। श्रमण संघ हैदराबाद के अध्यक्ष गौतम गुगलिया ने स्वागत स्वर प्रस्तुत किए।

साध्वीवृंद ने सामूहिक संगान कर प्रसन्नता व्यक्त की। आध्यात्मिक मिलन उपस्थित हर मन को प्रेरणा प्रदान करने वाला था। युवाचार्य ने तेरापंथी आचार्य एवं संत सतियों से जुड़े प्रसंग सुनाते हुए प्रमोद भाव व्यक्त किए। उन्होंने कहा कि साध्वी डॉ० मंगलप्रज्ञा जी ने अनेक यात्राएँ कीं हैं। लंबे समय तक समन श्रेणी में रहकर और जैन विश्व भारती यूनिवर्सिटी की वाइस चांसलर पद पर कार्य कर जिन शासन की महान सेवा की है।

योगक्षेम अभातेयुप योगक्षेम योजना

✳ अभातेयुप प्रबंध मंडल सत्र - 2019-2021	51,00,000
✳ श्री बच्छावत परिवार, सरदारशहर-जयपुर	5,00,000
✳ श्री बसंत अर्पित नाहर, महेंद्रगढ़-उधना	5,00,000
✳ श्री राकेश कठोतिया, लाडनूं-मुंबई	5,00,000
✳ श्री रूपचंद कोडामल जैनसुख दुगड़, बीदासर-मुंबई	5,00,000
✳ श्री शंकरलाल विमल विनीत पितलिया, भीलवाड़ा	5,00,000
✳ श्री शांतिलाल पारसमल दक उमरी, उधना-सूरत	5,00,000
✳ श्री सुमतिचंद गोठी, सरदारशहर-मुंबई	5,00,000
✳ श्री विपिन जैन पारख, सिरसा-मुंबई	5,00,000
✳ श्री राजकुमार गौतम प्रसाद जैन, बेलपाड़ा-उड़ीसा	5,00,000
✳ श्री सागरमल दीपक विमल कमलेश श्रीमाल, देवगढ़-बड़ौदा	5,00,000
✳ श्री जैनसुख दीपक बोथरा, छापर-सिलीगुड़ी	5,00,000
✳ श्री बसंत नवलखा, बीकानेर	5,00,000
✳ श्री बिमल चोपड़ा, गंगाशहर-यमुनानगर	5,00,000
✳ श्रद्धानिष्ठ श्रावक केशरीमल, अनिलकुमार, संजयकुमार, सुनीलकुमार चंडालिया (गंगापुर) सूरत	5,00,000
✳ श्री छत्तरमल गणेशमल विनीतकुमार बैद, राजलदेसर-चेन्नई	5,00,000

संस्कृति का संरक्षण - संस्कारों का संवर्द्धन जैन विधि - अमूल्य निधि

नामकरण संस्कार

अहमदाबाद।

सुशीला-नरेंद्र चोपड़ा की सुपौत्री एवं राजश्री विनय चोपड़ा की बिटिया का नाम जैन संस्कार विधि से संस्कारक आनंद बोथरा, जागृत दुगड़ ने मांगलिक मंत्रोच्चार का संगान कर संपादित किया।

परिषद ने चोपड़ा परिवार को बधाई प्रेषित की। परिषद की ओर से स्मृति चिह्न के रूप में मंगलभावना पत्रक की भेंट दी गई।

विनय चोपड़ा ने परिषद एवं संस्कारकों के प्रति आभार ज्ञापित किया। कार्यक्रम का संचालन संस्कारक जागृत दुगड़ ने किया।

राजराजेश्वरी नगर।

सुशील हेमलता बदानी की सुपौत्री प्रणत-श्रुति बदानी की पुत्री का नामकरण जैन संस्कार विधि से संस्कारक दिनेश मरोठी एवं गौतम नाहटा ने संपादित करवाया।

सुशील बदानी ने परिषद एवं संस्कारक का आभार व्यक्त किया। परिषद द्वारा परिवार जनों को मंगलभावना पत्रक भेंट किया गया। कार्यक्रम में परिषद अध्यक्ष विकास छाजेड़, सुसील भंसाली आदि की उपस्थिति रही।

नूतन गृह प्रवेश

राजाराजेश्वरी नगर।

छापर निवासी, बैंगलोर प्रवासी नरेंद्र निशांत नाहटा के नूतन गृह प्रवेश का कार्यक्रम जैन संस्कार विधि से संस्कारक राकेश दुधोड़िया एवं सह-संस्कारक आलोक छाजेड़ ने विधि-विधान एवं मंगल मेत्रोच्चार से संपन्न करवाया।

परिषद की ओर से धर्मेश नाहर ने शुभकामनाएँ प्रेषित की एवं नाहटा परिवार का आभार व्यक्त किया। नाहटा परिवार ने तेयुप, राजाराजेश्वरी नगर का आभार व्यक्त किया। परिषद द्वारा नाहटा परिवार को मंगलभावना यंत्र भेंट किया गया।

परिषद से सदस्य आलोक छाजेड़, विक्रम मेहर एवं धर्मेश नाहर की उपस्थिति रही। आभार ज्ञापन विक्रम मेहर ने किया।

नूतन प्रतिष्ठान शुभारंभ

बैंगलोर।

सूजानगढ़ निवासी, बैंगलोर प्रवासी निर्मल सिंधी के सुपुत्र सुरेंद्र सिंधी के नव प्रतिष्ठान का शुभारंभ संस्कारक विक्रम दुगड़ एवं जितेंद्र घोषल ने जैन संस्कार विधि से संपन्न करवाया।

तेयुप अध्यक्ष रजत बैद ने अपने विचार व्यक्त किए। सुरेंद्र सिंधी ने तेयुप, बैंगलोर के प्रति आभार व्यक्त किया। पारिवारिक जनों को मंगलभावना पत्रक भेंट कर मंगल पाठ से कार्यक्रम संपन्न करवया।

औरंगाबाद।

लोनार निवासी, औरंगाबाद प्रवासी महावीर जोगड़ के नूतन प्रतिष्ठान का शुभारंभ संस्कारक विवेक बागरेचा ने संपूर्ण विधि विधान से जैन संस्कार विधि से संपन्न करवाया।

संस्कारक विवेक बागरेचा ने शुभकामनाएँ प्रेषित की एवं मंगलभावना यंत्र प्रदान किया।

पर्वत पाटिया।

भीनमाल निवासी, सूरत प्रवासी संदीप कुमार जैन के नूतन प्रतिष्ठान का शुभारंभ जैन संस्कारक पवन कुमार बुच्चा ने जैन संस्कार विधि से संपन्न करवाया।

तेयुप के कार्यकारिणी सदस्य मुकेश गोलछा की उपस्थिति रही। तेयुप, पर्वत पाटिया ने मंगलभावना यंत्र भेंट किया।

✦ *कथनी-करनी की समानता साधना और व्यावहारिक निर्मलता की दृष्टि से भी अच्छी बात होती है।*
–आचार्यश्री महाश्रमण

मनोनुशासनम्

❑ **आचार्य तुलसी** ❑

(क्रमशः)

(१७) जाति, कुल, विद्या, ऐश्वर्य आदि में जो हीन हों, उनका तिरस्कार न करना मार्दव है। मैं उत्तम जातीय हूँ और यह नीच जातीय है–इस प्रकार मद नहीं करना चाहिए। जो मद नहीं करता, उसके कर्म-संस्कार क्षीण होते हैं। जो मद करता है, उसके कर्म-संस्कार संचित होते हैं, इसलिए आने वाले मान का निग्रह करो और जो मान आ गया, उसे विफल करो।

(१८) माया के निरोध को आर्जव कहा जाता है। जो ऋजु होता है, उसके कर्म-संस्कार क्षीण होते हैं। जो कुटिल होता है, उसके कर्म-संस्कार संचित होते हैं, इसलिए होने वाली माया का निग्रह करो और जो माया हो गई, उसे विफल करो।

(१९) अलुब्धता को शौच कहा जाता है। जो लुब्धभाव नहीं रखता है, उसके कर्म-संस्कार क्षीण होते हैं। जो लुब्धभाव रखता है, उसके कर्म-संस्कार संचित होते हैं। इसलिए आने वाले लोभ का निरोध करो और जो लोभ आ गया, उसे विफल करो।

(२०) जो सत्य बोलता है, उसके कर्म-संस्कार क्षीण होते हैं। जो असत्य बोलता है, उसके कर्म-संस्कार संचित होते हैं।

(२१) हिंसा आदि अकरणीय कार्य से विरत होना संयम है। जो संयम करता है, उसके कर्म-संस्कार क्षीण्या होते हैं। जो असंयम करता है, उसके कर्म-संस्कार संचित होते हैं।

(२२) संचित कर्मों का शोधन करने वाले पराक्रम को तप कहा जाता है। जो तप करता है, उसके कर्म-संस्कार क्षीण होते हैं, इसलिए तप का अभ्यास करो।

(२३) संयमी को वस्त्र, पात्र, औषध आदि का संविभाग देने को त्याग कहा जाता है। जो संविभाग करता है, उसके कर्म-संस्कार क्षीण होते हैं, इसलिए संविभाग करो।

(२४) अपने शरीर के प्रति जो निःसंगता होती है, निर्ममत्व होता है, उसे आकिंचन्य कहा जाता है। जो निःसंग होता है, उसके कर्म-संस्कार क्षीण होते हैं। जो आसक्त होता है, उसके कर्म-संस्कार संचित होते हैं, इसलिए आकिंचन्य का अभ्यास करो।

(२५) जो ब्रह्मचर्य का भली-भाँति आचरण करता है, उसके कर्म-संस्कार क्षीण होते हैं। जो उसका सम्यग् आचरण नहीं करता, उसके कर्म-संस्कार संचित होते हैं, इसलिए ब्रह्मचर्य का आचरण करो।

महाव्रत

महर्षि पतंजलि ने अष्टांग योग का प्रतिपादन किया है। उसमें पहला अंग यम है। जैन साधना पद्धति का पहला अंग महाव्रत है। महाव्रतों को मूल गुण और शेष साधना के अंगों को उत्तर गुण माना जाता है। महाव्रतों के होने पर अन्य साधना के अंग विकसित हो सकते हैं। इनके न होने पर वे विकसित नहीं हो सकते। इसलिए महाव्रत मूल गुण हैं। सुदृढ़ आधार के बिना भवन की मंजिलों की कल्पना नहीं की जा सकती। वैसे ही मूल गुणों का स्थिर अभ्यास किए बिना धारणा, ध्यान और समाधि की कल्पना नहीं की जा सकती। इस दृष्टि से साधना के प्रसंग में महाव्रतों का प्राथमिक स्थान है।

महाव्रत के पाँच प्रकार हैं–(१) अहिंसा, (२) सत्य, (३) अस्तेय, (४) ब्रह्मचर्य, (५) अपरिग्रह।

इनमें मुख्य स्थान अहिंसा का है। शेष सब उसी का विस्तार है। अहिंसा के दो रूप होते हैं–(१) संकल्पकृत अहिंसा, (२) सिद्ध अहिंसा।

साधना के आरंभ में साधक अहिंसा का संकल्प स्वीकार करता है। इसमें मानसिक भूमिका सुपरिपक्व नहीं होती, इसलिए बार-बार उतार-चढ़ाव आता रहता है। हिंसा के संस्कार पुनः-पुनः उद्दीप्त होते रहते हैं। किंतु अहिंसा का संकल्प तथा उसकी सिद्धि का लक्ष्य होने के कारण साधक उस स्थिति का अनुभव करता हुआ भी आगे की ओर बढ़ता चला जाता है। वह निराश होकर न पीछे लौटता है और न रुकता है। आंतरिक शुद्धि का अभ्यास करते-करते कषाय क्षीण होता है, तब अहिंसा सिद्ध हो जाती है। उस स्थिति में साधक के मन में समता का पूर्ण विकास होता है। उसके मन में फिर शत्रु और मित्र का भेद नहीं रहता। जीवन के प्रति अनुराग और मृत्यु का भव नहीं रहता। हीन और उत्कर्ष की भावना समाप्त हो जाती है। निंदा से ग्लानि और प्रशंसा से उत्फुल्लता नहीं होती। मान और अपमान से उसका मानसिक संतुलन नहीं बिगड़ता। उसमें सहज संयम विकसित होता है और उसमें सब जीवों को आत्मतुल्य समझने की प्रज्ञा प्रकट हो जाती है।

अहिंसा के साथ-साथ व्यक्ति में ऋजुता प्रकट होती है, यही उसका सत्य पक्ष है।

अहिंसा से अपनी मर्यादा का विवेक जागृत होता है, इसलिए अहिंसक व्यक्ति दूसरों के स्वत्व का अपहरण नहीं करता, यही उसका अचौर्य पक्ष है।

अहिंसक व्यक्ति अपने इंद्रिय और मन पर अधिकार स्थापित करता है, यही उसका ब्रह्मचर्य पक्ष है।

अहिंसक व्यक्ति आत्मलीन रहता है। वह बाह्य वस्तुओं में आसक्त नहीं होता, यही उसका अपरिग्रह पक्ष है।

अहिंसा, सत्य और अपरिग्रह का आध्यात्मिक मूल्य असीम होता है। ब्रह्मचर्य दो भागों में विभक्त है–(१) संकल्पसिद्ध ब्रह्मचर्य, (२) सिद्ध ब्रह्मचर्य।

सिद्ध ब्रह्मचर्य की भूमिका तक पहुँचना हमारा लक्ष्य है। शास्त्रों में 'घोरबंभयारी' शब्द आता है। वह एक विशेष प्रकार की लब्धि (योगज शक्ति) है। वह दीर्घकालीन साधना से उपलब्ध होती है। राजवार्तिक के अनुसार जिसका वीर्य स्वप्न में भी स्खलित न हो, वह घोर ब्रह्मचारी है। जिसका मन स्वप्न में भी अणुमात्र विचलित नहीं होता, उसे घोर ब्रह्मचर्य की लब्धि प्राप्त होती है। शुभ संकल्पों का अर्थ है–मैथुन-विरति या सर्वेन्द्रियोपरम। असत्य, चोरी आदि का संबंध मुख्यतः मानसिक भूमिका से है। ब्रह्मचर्य दैहिक और मानसिक दोनों भूमिकाओं से संबंधित है। अतः उसकी पालना के लिए शरीर-शास्त्रीय ज्ञान भी आवश्यक है। उसके अभाव में ब्रह्मचर्य को समझने में भी कठिनाई होती है।

अब्रह्मचर्य के दो कार हैं–(१) मोह, (२) शारीरिक परिस्थिति।

व्यक्ति जो कुछ खाता है, उसके शरीर में प्रक्रिया चलती है। उसकी पहली परिणति रस है। वह शोणित आदि धातुओं में परिणत होता हुआ सातवीं भूमिका में वीर्य बनता है। उसके बाद वह ओज के रूप में शरीर में व्याप्त होता है। ओज केवल वीर्य का ही सार नहीं है। वह सब धातुओं का सार है। शरीर में अनेक नाड़ियाँ हैं। उनमें एक काम-वाहिनी नाड़ी है। उसका स्थान पैर के अंगूठे से लेकर मस्तिष्क के पिछले भाग तक है। काम-वासना को मिटाने के लिए जो आसन किए जाते हैं, उन आसनों से इसी नाड़ी पर नियंत्रण किया जाता है। खाने से वीर्य बनता है। वह रक्त के साथ भी रहता है और वीर्याशय में भी जाता है। वीर्याशय में अधिक वीर्य जाने से अधिक उत्तेजना होती है और काम-वासना भी अधिक जागती है। ब्रह्मचारी के लिए यह एक कठिनाई है कि वह जीते-जी खाना नहीं छोड़ सकता। जो खाता है, उसका रस आदि भी बनता है, वीर्य भी बनता है। वह अंडकोश में जाकर संगृहीत भी होता है और वह वीर्याशय में भी जाता है। योगियों ने इस समस्या पर विचार किया कि इस परिस्थिति को विवशता ही माना जाए या इस पर नियंत्रण पाने का कोई उपाय ढूँढ़ा जाए? उन्होंने स्पष्ट अनुभव किया–वीर्य केवल वीर्याशय में जाएगा तो पीछे से चाप पड़ने से आगे का वीर्य बाहर निकलेगा, फिर दूसरा आएगा और वह भी खाली होगा। खाली होना और भरना यही क्रम रहेगा तो शरीर के अन्य तत्त्वों को पोषण नहीं मिलेगा। इसलिए उन्होंने वीर्य को मार्गान्तरित करने की पद्धति खोज निकाली। मार्गान्तरण के लिए ऊर्ध्वाकर्षण की साधना का विकास किया। उनका प्रयत्न रहा कि वीर्य वीर्याशय में कम जाए और ऊपर सहस्रार-चक्र में अधिक जाए। इस प्रक्रिया में वे सफल हुए। वीर्य को ऊर्ध्व में ले जाने से वे ऊर्ध्वरेता बन गए।

वीर्याशय पर चाप पड़ने का एक कारण आहार है। ब्रह्मचर्य के लिए आहार का विवेक अत्यंत आवश्यक है। अतिमात्र आहार और प्रणीत आहार दोनों वर्जनीय हैं। गरिष्ठ आहार नहीं पचता इसलिए वह कब्ज करता है। मलावरोध होने से कुवासना जागती है और वीर्य का क्षय होता है, इसलिए पेट भारी रहे उतना मत खाओ और प्रणीत आहार मत करो। संतुलित आहार करो, जिससे पेट साफ रहे। खाना जितना आवश्यक है, उससे कहीं अधिक आवश्यक है मल-शुद्धि। मल के अवरोध से वायु बनता है। वायु जितना अधिक बनेगा उतना ही अहित होगा। वायु-विकार से अधिक बचो। वीर्य को जब अधिक चाप होता है, तब ब्रह्मचर्य के प्रति संदेह उत्पन्न हो जाता है।

उत्तराध्ययन में कहा गया है–'बंभचेरे संका वा कंखा वा वितिगिच्छा वा समुप्पज्जिज्जा भेयं वा लभेज्जा, उम्मायं वा पाउणिज्जा, दीहकालियं वा रोगायंकं हवेज्जा, केवलिपण्णत्ताओ वा धम्माओ भंसेज्जा।'

शंका, कांक्षा और विचिकित्सा उत्पन्न होती है, भेद होता है, उम्माद होता है, दीर्घकालिक रोग और आतंक भी हो जाता है तथा केवलि-प्रज्ञप्त धर्म से भ्रष्ट हो जाता है। ब्रह्मचर्य की साधना के लिए कुछ एक साधनों की सूचना दी जाती है। उनका अभ्यास किया जाए तो वह निश्चित परिणाम लाएगा। इनमें पहला साधन वीर्य-स्तंभ प्राणायाम है। इसका दूसरा नाम ऊर्ध्वाकर्षण प्राणायाम भी है। सिद्धासन में बैठकर पूर्णरूप से रेचन करें। रेचनकाल में चिंतन करें, मेरा वीर्य रक्त के साथ मिलकर समूचे शरीर में व्याप्त हो रहा है। फिर पूरक करें–जालंधरबंध और मूलबंध करें। पूरककाल में पेट को सिकोड़ें और फुलाएँ। सिकोड़ने और फुलाने की क्रिया को पाँच-सात पूरकों में सौ बार दोहराएँ।

दूसरा ध्यान है। तीसरा अल्पकालीन कुंभक है। चौथ प्रतिसंलीनता है।

इंद्रियाँ चंचल होती हैं, पर वह उनकी स्वतंत्र प्रवृत्ति नहीं है। मन से प्रेरित होकर ही वे चंचल बनती हैं। मन जब स्थिर और शांत होता है, तब वे अपने आप स्थिर और शांत हो जाती है। मन अंतर्मुखी बनता है, तब इंद्रियाँ अंतर्मुखी हो जाती हैं। महर्षि पतंजलि ने इसी आशय से लिखा है–

स्वविषयासम्प्रयोगे चित्तस्यस्वरूपानुकाल इवेन्द्रियाणां प्रत्याहारः।

– पातंजल योगदर्शन–साधनापाद, ५४

(क्रमशः)

संबोधि

❑ **आचार्य महाप्रज्ञ** ❑

बंध-मोक्षवाद

मिथ्या-सम्यग्-ज्ञान-मीमांसा

भगवान् प्राह

'संबुज्झह किं न बुज्झह, संबोही खलु पेच्च दुल्लहा।
नो विणमंति राइओ, नो सुलभं पुणरावि जीवियं।।'

महावीर का संदेश है–संबोधि को प्राप्त करो। संबोधि के लिए ही जीवन उपयोगी है। आगे ऐसा अवसर दुर्लभ है। बीती हुई रात्रियाँ (क्षण) पुनः लौटकर नहीं आतीं और न यह मनुष्य जीवन भी पुनः सुलभ है।

केनोपनिषद् संबोधि की भाँति 'परब्रह्म' को जानने का आग्रह करता है। वह कहता है–

'इह चेदवेदीदथ सत्यमस्ति,
न चेदिहावेदीन्महती विनष्टिः।
भूतेषु भूतेषु विचिंत्य धीराः,
प्रेत्यास्माल्लोकादमृता भवन्ति।।

'इस मनुष्य जीवन में ही यदि परमात्मा को जान लिया तो बहुत अच्छा है। यदि नहीं जाना तो महान् विनाश है। धीर व्यक्ति प्राणी मात्र में परमात्मा को जानकर अमर हो जाते हैं, इस संसार में पुनः जन्म नहीं लेते।'

संबोधि जैन दर्शन का प्रिय शब्द है और इस पुस्तक का नाम भी 'संबोधि' है। संबोधि को सुनना ही नहीं है किंतु जीवन में घटित करना है। जैसे मेघ के जीवन में वह घटी, वैसे ही हम सबके जीवन में वह घटित हो सकती है। दुःख से मुक्ति के लिए यह अनिवार्य है। **'आरुग्ग बोहिलाभं, समाहिवरमुत्तमं दिंतु'**–मुझे आरोग्य, बोधि-लाभ और समाधि की प्राप्ति हो। यह एक विशुद्ध प्रार्थना है। इसके पीछे कोई भौतिक चाह नहीं है। जिस प्रार्थना में भौतिक मांग हो, वह प्रार्थना परमात्मा तक नहीं पहुँचाती। यह तो स्वभाव उपलब्धि की माँग है। साधक अपनी दुर्बलता स्वीकार करता है कि यह मेरे वश की बात नहीं है। आपका सहारा हो तो यह संभव है। वह छोड़ देता है उस अदृश्य शक्ति के हाथों में स्वयं को।

संबोधि स्वभाव है। वह व्यक्ति से दूर नहीं है। उसका न होना ही आश्चर्यजनक है, होना कोई आश्चर्यजनक नहीं। स्वभाव कभी अपने केंद्र से पृथक् नहीं होता। सम्यग् दर्शन, ज्ञान, चारित्र–ये सभी संबोधि के ही रूप हैं। इसलिए कहा है–धीर पुरुष अंत से चलते हैं। धीर का अर्थ है–जो बुद्धि से सुशोभित है, जिसकी बुद्धि सत्य-शोध की ओर अभिमुख है। बुद्धि यदि यथार्थ गवेषणा में प्रवृत्त न हो तो वह यथार्थ में धीर या बुद्धिमान नहीं है। **'बुद्धेः फलं तत्त्वविचारणा च'** बुद्धि की उपादेयता सत्य की खोज में है। 'धीरा अंतेन गच्छन्ति' बुद्धिमान् साधक का समग्र व्यवहार अपूर्व ढंग का होता है। वह अब वैसा आचरण, व्यवहार नहीं करता, जैसा अतीत में करता था। 'अंत' का अर्थ है–आगे वैसा जीवन नहीं जीना। जीवन के समस्त पापों का अंत जागकर ही किया जा सकता है। साधना जागरिका' है। जीवन का प्रत्येक चरण जागरिकापूर्वक उठे। अन्यथा प्रमाद का नाश कठिन है। जहाँ प्रमाद होगा वहाँ दुःख भी होगा। धीर पुरुष होश का सहारा लेकर दुःखों का अंत कर देते हैं।

(क्रमशः)

अवबोध

❑ **मंत्री मुनि सुमेरमल 'लाडनूं'** ❑

कर्म बोध

प्रकृति व करण

प्रश्न ३३ : भाव करण किसे कहते हैं?
उत्तर : पूर्वोक्त चार करण के रूप में जो कर्मों का बंध होता है, उसके उदय को भाव करण कहते हैं।

प्रश्न ३४ : करण की उत्तर प्रकृतियाँ कितनी हैं?
उत्तर : करण की उत्तर प्रकृतियाँ ५५ हैं–
द्रव्य-५, शरीर-५, इंद्रिय-५, मन-४, वचन-४, कषाय-४, लेश्या-६, संज्ञा-४, दृष्टि-३, समुद्घात-७, वेद-३, आश्रव-५ = कुल ५५

अवस्था व समवाय

प्रश्न १ : कर्म की कितनी अवस्थाएँ हैं?
उत्तर : कर्म की दस अवस्थाएँ हैं–
(१) बंध, (२) उद्वर्तन, (३) अपवर्तन, (४) सत्ता, (५) उदय, (६) उदीरणा, (७) संक्रमण, (८) उपशम, (९) निधत्ति, (१०) निकाचना।

(क्रमशः)

उपासना

(भाग - एक)

❑ **आचार्य महाश्रमण** ❑

जैन जीवनशैली

अनावश्यक हिंसा से बचने का सबसे पहला परिणाम होता है–पर्यावरण के प्रदूषण की समाप्ति। आज पर्यावरण का जो प्रदूषण बढ़ रहा है, उसमें अनाश्यक हिंसा का बहुत बड़ा हाथ है। कितना पानी का अपव्यय, कितने जंगलों की कटाई, कितने पशु-पक्षियों का निर्ममता से शिकार, कितनी वनस्पतियों का विनाश, कितनी अनावश्यक भूमि का खनन और दोहन–यह सब अपने स्वार्थ के लिए इतनी मात्रा में हो रहा है कि वातावरण तेजी से प्रदूषित होता जा रहा है। यदि अनावश्यक हिंसा टल जाए तो पृथ्वी पर शांति कायम हो जाए, आदमी भी खुशहाल हो जाए।

अहिंसा के लिए आवश्यक है–संवेदनशीलता। दूसरे को कष्ट देते समय यह अनुभूति हो कि यह कष्ट मैं दूसरों को नहीं, स्वयं को दे रहा हूँ। यही संवेदनशीलता है। जिस समाज में संवेदनशीलता नहीं होती, वह समाज अपराधियों, हत्यायों या क्रूरता के खेल खेलने वालों का समाज बन जाता है। उसे सभ्य और शिष्ट समाज नहीं कहा जा सकता। इसलिए आवश्यक है कि समाज में संवेदनशीलता का विकास हो।

संदेह के कारण आज परस्पर शत्रुता का वातावरण बन रहा है। आदमी-आदमी के बीच, एक राष्ट्र और दूसरे राष्ट्र के बीच संदेह की खाई निरंतर चौड़ी होती जा रही है। मैत्री का विकास हो, संदेह मिटे, यह आवश्यक है। मैत्री की भावना उदात्त होती है तो अपने आप एक नए वातावरण की सृष्टि होती है, जीवन सुखद बनता है।

समण संस्कृति

जैन जीवनशैली का चौथा सूत्र है–समण संस्कृति। समण प्रतीक है समानता का। समण प्रतीक है उपशम और शांति का। समण प्रतीक है तपस्या, श्रम और पुरुषार्थ का। समण संस्कृति ने एक त्रिपथगा प्रवाहित की थी। यह भारत की एक पवित्र गंगा है, जिसने तीन पथों में विकास किया था, जिसके तीन आयाम बने थे।

समानता न केवल मनुष्य के प्रति, किंतु प्राणीमात्र के प्रति। जब तक प्राणीमात्र को समानता की दृष्टि से नहीं देखेगा, मनुष्य स्वयं को दूसरे के समान नहीं देख पाएगा। प्राणीमात्र के प्रति समत्व का भाव जागेगा, तभी हिंसा कम होगी। समण संस्कृति ने हिंसा के अल्पीकरण और अहिंसा के विकास की दिशा में जो प्रस्थान किया था, उसका पहला सूत्र बनता है–समानता।

समण संस्कृति ने दूसरा सूत्र दिया–श्रमशीलता। तपस्या, करना, स्वावलंबन–अपने श्रम पर भरोसा करना, यह श्रम की जीवनशैली है।

आज आदमी श्रम से जी चुरा रहा है, इसीलिए समस्याएँ भी पैदा हो रही हैं। वह स्वयं को बड़ा आदमी मान कर श्रम से कतराता है। काम करने के लिए नौकर है, फिर हमें काम करने की क्या जरूरत है? इतना श्रमपरांगमुख जीवन बन गया है आज के आदमी का।

एक आदमी सेठ के घर गया। बोला–'सेठ साहब, बर्तन चाहिए।'

'क्यों?'

'कल शादी है।'

सेठ ने इधर-उधर देखकर उत्तर दिया–'अभी नहीं। यहाँ कोई आदमी नहीं है।'

कुछ देर बाद वह आदमी फिर लौटकर आया। बोला–'सेठ साहब, बहुत जरूरी है। बर्तन देने की कृपा करें।'

सेठ ने इधर-उधर देखकर वही उत्तर दिया–'अभी कोई आदमी नहीं है।'

उस आदमी से रहा नहीं गया। तत्काल बोल उठा–'मैं तो आपको आदमी समझकर ही आया था।'

तब कितनी दयनीय दशा बन जाती है, जब आदमी अपने-आपको आदमी न माने और अपने कर्मचारी को आदमी माने। समण संस्कृति ने श्रम का सूत्र देते हुए कहा–'स्वयं पुरुषार्थ करो, अपने भरोसे पर जीने की आदत डालो।'

समानता, उपशम और स्वावलंबन–इन तीन सूत्रों को एक शब्द में कहा गया–हमारी जीवनशैली समण संस्कृति की जीवनशैली बने, वह विषमता की जीवनशैली न बने, आवेश और उत्तेजना की जीवनशैली न बने, परावलंबन और निठल्लेपन की जीवनशैली न बने।

(क्रमशः)

अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स
24 - 30 जुलाई, 2023

✦ *साधु का धर्म है कि अपने संयम की अच्छी आराधना करना। वह संयम जीवन का संरक्षण जितनी जागरूकता से करेगा, उसे उतना ही लाभ प्राप्त हो सकेगा।*

—आचार्यश्री महाश्रमण

चातुर्मासिक मंगल प्रवेश के आयोजन

कानपुर

साध्वी संगीतश्री जी ने अपनी सहवर्ती साध्वी शांतिप्रभा जी, साध्वी कमलविभा जी तथा साध्वी मुदिताश्री जी के साथ चातुर्मासिक मंगल प्रवेश किया। रविंद्र जैन के सिविल लाइंस स्थित निवास से सुबह विहार प्रारंभ हुआ। तेरापंथी सभा, कानपुर के तत्त्वावधान में और कानपुर महिला मंडल, तेयुप के सहयोग से एक नयनाभिराम रैली का आयोजन किया गया। ज्ञानशाला के छोटे बच्चों ने उत्साहपूर्वक मंगल प्रवेश रैली में अपनी उपस्थिति दर्ज कराई।

रायबरेली समाज की ओर से अच्छी संख्या में श्रावक समाज उपस्थित था। विहार मार्ग में गणेशमल जम्मड़ के प्रतिष्ठान का उनके परिवार तथा कर्मचारियों ने साध्वीवृंद का स्वागत-अभिनंदन किया। साध्वी संगीतश्री जी ने अपने कहा कि पूरे चातुर्मास में निर्जरा को सर्वाधिक महत्त्व देना है।

साध्वीश्री जी ने नित्य व्याख्यान श्रवण, उपवास, जप-तप, शनिवार सामायिक आदि की प्रेरणा प्रदान की। सभा अध्यक्ष धनराज सुराणा ने साध्वीवृंद का संपूर्ण श्रावक समाज की ओर से हार्दिक अभिनंदन किया। महिला मंडल अध्यक्षा शालिनी बुच्चा और तेयुप अध्यक्ष दिलीप मालू ने अपने स्वागत विचार प्रस्तुत करे। कार्यक्रम का संचालन सभा मंत्री संदीप जम्मड़ ने किया।

बड़ोदरा

साध्वी मंजुयशा जी अहमदाबाद में पूज्यप्रवर की सेवा उपासना का गुरु निर्देशानुसार बड़ोदरा की ओर विहार कर खेड़ा ग्राम, आनंद, नडियाद आदि क्षेत्र में यथाचित प्रवास कर बड़ोदरा शहर में पधारी। करीब ५५ दिन में बड़ोदरा शहर के ४० उपनगरों में यथोचित प्रवास किया। वहाँ प्रवासित तेरापंथी परिवारों की पूरी सार-संभाल करती हुई पूरे श्रावक-श्राविका समाज में अध्यात्म की अलग जगाई।

तेरापंथ समाज के भाई, महिला मंडल की बहनें, तेयुप के युवा साथी, कन्या मंडल की कन्याएँ एवं ज्ञानशाला के बच्चे आदि सभी अपने गणवेश में कतारबद्ध जयनारों के साथ बड़े व्यवस्थित रूप से लंबे जुलूस के साथ चले।

साध्वीश्री जी ने भवन में मंगल प्रवेश करते ही अपने आराध्य की स्तुति करते हुए एक भक्तिपूर्ण गीतिका का सामूहिक संगान किया। कार्यक्रम का प्रारंभ तेमम की बहनों के मंगल गीत से हुआ। बड़ोदरा तेरापंथी सभा के अध्यक्ष हस्तीमल मेहता ने सभा तथा पूरे तेरापंथ समाज की ओर से साध्वीवृंद का स्वागत किया।

इस अवसर पर तेरापंथी सभा के मंत्री दीपक श्रीमाल, अणुव्रत समिति बड़ोदरा के अध्यक्ष राजेंद्र मेहता, टीपीएफ के संयोजक राजेंद्र पारख, श्रेयांस चोपड़ा, शीला बड़ोला, ज्ञानशाला की मुख्य प्रशिक्षिका दक्षा श्रीमाल आदि अनेक गणमान्यजन उपस्थित थे। कार्यक्रम में आसपास क्षेत्र के भी भाई-बहन अच्छी संख्या में पहुँचे, मंगलपाठ से कार्यक्रम संपन्न हुआ।

जलगाँव

मुनि आलोक कुमार जी का चातुर्मासिक प्रवेश अणुव्रत भवन में उत्साहपूर्वक संपन्न हुआ। इस अवसर पर अणुव्रत चेतना रैली की पूरे रास्ते शहरवासियों के आकर्षण का केंद्र रही। इस रैली में सभी संस्थाओं ने अपने गणवेश एवं जैन ध्वज के साथ भाग लिया।

तीर्थंकर भगवान, जैन शासन एवं तेरापंथ धर्मसंघ के जय घोष लगाती रैली अणुव्रत भवन पहुँची। अणुव्रत भवन में प्रवेश के पश्चात मुनिश्री का स्वागत समारोह मनाया गया। आमदार राजू मामा भोले, स्थानकवासी संघ कार्याध्यक्ष कस्तूरचंद बाफना, मूर्तिपूजक संघ के ललित लोढ़ा, दिगंबर संघ के योगेश बाटलीवाला खानदेश सभा के अध्यक्ष नानक राम तनेजा, महामंत्री सूरजमल सूर्या, तेरापंथ महासभा सदस्य मनोज जोगड़ इस कार्यक्रम में उपस्थित रहे एवं मुनिश्री का स्वागत किया।

मंगलाचरण के साथ कार्यक्रम की शुरुआत हुई। महिला मंडल की बहनों ने सुमधुर स्वागत गीत का संगान किया। ज्ञानशाला के छोटे-छोटे बच्चों ने विनीता समदरिया व प्रशिक्षिकाओं के साथ मुनिश्री के स्वागत में काफी सुंदर प्रस्तुति दी।

तेरापंथ सभा की ओर से भिक्षु भजन मंडली ने मुनिश्री के स्वागत में गीत के माध्यम से अपनी भावनाएँ व्यक्त की। तेरापंथ सभा अध्यक्ष जितेंद्र चोरड़िया, महिला मंडल अध्यक्ष नम्रता सेठिया, तेयुप अध्यक्ष सुदर्शन बैद, टीपीएफ अध्यक्ष संजय चोरड़िया—इन सभी ने भी अपना मनोगत व्यक्त किया।

मुनि लक्ष्यकुमार जी ने अपने उद्बोधन में सम्यक् ज्ञान को बढ़ाना व अहंकार को कम करना विषय पर उपस्थित जन-समुदाय को सरल भाषा में समझाया।

मुनि हिमकुमार जी ने सुमधुर गीत के माध्यम से पंच परमेष्ठी को याद किया एवं उनके महत्त्व को बतलाया।

मुनि आलोक कुमार जी ने कहा कि अपनी शक्ति का गोपन ना करें उसका सदुपयोग करें। त्याग का जैन धर्म में विशेष महत्त्व है, उसका स्वागत है साथ ही मुनिश्री ने २१ गुणों का विकास किस तरह करें, इसका काफी सरल भाषा में विवेचन किया, जिसका उपस्थित जनसमुदाय पर काफी सकारात्मक असर पड़ा।

माणकचंद बैद, राजकुमार सेठिया, पवन सिंघी ने क्रमशः तीनों मुनिश्री के संक्षिप्त परिचय का वाचन किया। मुनिश्री के चातुर्मासिक मंगल प्रवेश पर आसपास के क्षेत्रों से व जलगाँव से काफी बड़ी संख्या में भाई-बहन उपस्थित रहे।

कार्यक्रम को सफल बनाने के लिए सभी संस्थाओं के कार्यकर्ताओं ने श्रम का नियोजन किया। कार्यक्रम का सूत्र संचालन सभा मंत्री नीरज समदरिया ने एवं आभार ज्ञापन रूपेश सुराणा ने किया।

चेन्नई

शासनश्री साध्वी शिवमाला जी का जुलूस के साथ तेरापंथ भवन, ट्रिप्लीकेन में चातुर्मास प्रवेश हुआ।

चातुर्मास प्रवेश एवं स्वागत अभिनंदन समारोह में साध्वी शिवमाला जी ने कहा कि संतों का आगमन पुण्योदय की निशानी है। जन-जन के लिए कल्याणकारी, मंगलकारी होता है। पाप, ताप, संताप को हरने वाला होता है। थोड़े से नमक से भोजन का स्वाद बढ़ जाता है, उसी प्रकार संतों की थोड़ी संगत भी आत्म कल्याणकारी होती है, जीवन की दशा, दिशा बदलने वाली होती है।

साध्वीश्री जी ने विशेष रूप से कहा कि संत प्रकाशित करने आते हैं न कि प्रभावित। संत सुलझाने आते हैं न कि उलझाने। साधु वित्त को नहीं अपितु चित्त की दुर्लभता को हरते हैं। साध्वीश्री जी ने गुरुदेव के प्रति कृतज्ञता व्यक्त की।

साध्वी अमितरेखा जी ने कहा कि चातुर्मास सीजन का समय होता है। साध्वी अर्हम्प्रभा जी ने आह्वान किया कि इस चातुर्मास काल में ज्यादा से ज्यादा मुमुक्षु बनें, उपासक, बारह व्रती, सुमंगल साधना वाले श्रावक बनें।

अणुव्रत रैली का आयोजन

इससे पूर्व शांतिलाल बंबोली एलिस रोड निवास स्थान से अणुव्रत रैली के साथ साध्वीवृंद का मंगल प्रस्थान हुआ। ट्रिप्लीकेन ज्ञानशाला, कन्या मंडल, किशोर मंडल, तेयुप, महिला मंडल, तेरापंथ सभा आदि विभिन्न केंद्रीय एवं स्थानीय संस्थाओं के सदस्यों के बीच साध्वीवृंद जब विहाररत थे, पूरा बाजार जय घोषों से गुंजायमान हो रहा था।

स्वागत अभिनंदन समारोह का शुभारंभ साध्वीश्री जी के मंगल मंत्रोच्चार एवं नमस्कार महामंत्र के जप से हुआ। ज्ञानशाला ज्ञानार्थियों ने महावीर अष्टकम् से मंगलाचरण किया। ट्रिप्लीकेन महिला समाज के मंगल संगान पर ज्ञानार्थियों ने सुंदर प्रस्तुति दी। कन्या मंडल ने चारों साध्वीवृंदों का काव्यात्मक रूप से परिचय दिया। तेरापंथ ट्रस्ट ट्रिप्लीकेन के प्रबंध न्यासी सुरेश संचेती ने स्वागत अभिभाषण की प्रस्तुति दी।

अभ्यर्थना के स्वर

स्वागत अभ्यर्थना में तेरापंथी महासभा कार्यसमिति सदस्य और साहूकारपेट ट्रस्ट के प्रबंध न्यासी विमल चिप्पड़, तेमम अध्यक्षा पुष्पा हिरण, ज्ञानशाला प्रशिक्षिका कुसुम चोरड़िया, महिला मंडल मंत्री रीमा सिंघवी, तेरापंथ सभा मंत्री अशोक खतंग, अणुव्रत समिति अध्यक्ष ललित आंचलिया, टीपीएफ के अध्यक्ष प्रसन्न बोथरा सहित अनेक पदाधिकारीगण एवं गणमान्यजन उपस्थित थे। तेयुप अध्यक्ष दिलीप गेलड़ा ने साध्वी लावण्यश्री जी से प्राप्त संदेश का वाचन किया। स्वागत समारोह का संचालन मंत्री विजय कुमार गेलड़ा ने किया।

जयपुर

विद्याधर नगर स्थित तेरापंथ भवन में मुनि तत्त्वरुचि जी व मुनि संभवकुमार जी का चातुर्मासिक मंगल प्रवेश जुलूस के रूप में श्रावक समाज की उपस्थिति में हुआ। इस अवसर पर मुनिश्री ने चातुर्मास में ज्ञान, दर्शन, चारित्र, तप में वृद्धि करने की प्रेरणा प्रदान की।

तेयुप, जयपुर के अध्यक्ष अमित छलानी ने सेवा, संस्कार व संगठन के त्रिआयामी उद्देश्यों पर गतिशील रहने का संकल्प लेते हुए स्वागत के क्रम में अपने विचार व्यक्त किए।

चेन्नई (साहूकारपेट)

साध्वी लावण्यश्री जी का चातुर्मास मंगल प्रवेश तेरापंथी सभा भवन में जुलूस के साथ हुआ। चातुर्मासिक मंगल प्रवेश के समय सभा भवन एलिवेशन एवं कार्यालय के लिए साध्वीश्री जी ने मंगलपाठ सुनाया।

कार्यक्रम साध्वीश्री जी द्वारा महामंत्रोचारण कन्या मंडल और महिला मंडल के मंगलाचरण के साथ प्रारंभ हुआ। अध्यक्ष उगमराज सांड ने सभी का स्वागत किया। सभी संस्थाओं—अणुव्रत समिति से गौतम सेठिया, साहूकारपेट ट्रस्ट से विमल चिप्पड़, तेयुप से दिलीप गेलड़ा, महिला मंडल से पुष्पा हिरण, टीपीएफ की ओर से प्रसन्न बोथरा, तनसुखलाल नाहर, इंदरचंद डूंगरवाल, विजयराज गेलड़ा, जयंतिलाल सुराणा आदि ने स्वागत अभिव्यक्ति दी। भंसाली परिवार के पुरुषों और महिलाओं ने भी भावाभिव्यक्ति दी।

कार्यक्रम के दौरान विशिष्ट अतिथि प्यारेलाल पितलिया और मुख्य अतिथि डॉ० दिलीप धींग ने अपने भाव रखे। महिला मंडल और कन्या मंडल ने रोचक प्रस्तुतियाँ दी।

साध्वी लावण्यश्री जी ने कहा कि आज आप सभी पूरे जोश से हमारे चातुर्मासिक प्रवेश का स्वागत-अभिनंदन कर रहे हैं, सार्थकता तब होगी जब चातुर्मासिक प्रवास के दौरान सभी त्याग-तपस्या-प्रवचन श्रवण-धर्म आराधना में समय का सदुपयोग करेंगे। सभी इसका आध्यात्मिक लाभ लें।

साध्वीवृंद ने सभा को सरस वाणी से प्रतिबोध देते हुए चातुर्मासिक कार्यक्रमों की सूचना दी। कार्यक्रम में श्रावक-श्राविकाओं की उल्लेखनीय उपस्थिति रही। मंच संचालन सभा के मंत्री अशोक खतंग ने किया। आभार ज्ञापन संगठन मंत्री चंद्रेश चिप्पड़ ने किया।

आचार्य भिक्षु के जन्म दिवस एवं बोधि दिवस के विविध आयोजन

साउथ कोलकाता

मुनि जिनेश कुमार जी के सान्निध्य में आचार्यश्री भिक्षु का २९८वाँ जन्म दिवस एवं २६६वाँ बोधि दिवस कार्यक्रम तेरापंथ भवन में तेरापंथी सभा द्वारा आयोजित किया गया।

इस अवसर पर मुनि जिनेश कुमार जी ने कहा कि आचार्य भिक्षु तेरापंथ धर्मसंघ के संस्थापक थे। वे मरुधर के मंदार, अलबेले योगी, निस्पृह साधक व शांत सुधारस के धनी थे। वे विलक्षण, विशिष्ट, विवेक संपन्न पुरुष थे। उनका जीवन बहुआयामी था। मनिश्री ने आगे कहा कि आज के दिन आचार्यश्री भिक्षु को तत्त्वज्ञान का बीज मिला था। राजनगर की धरती के साथ तेरापंथ के बीज वपन का गौरवशाली इतिहास जुड़ा हुआ है। जैन धर्म में सम्यक् ज्ञान आदि को बोधि कहा गया है। बोधि का अर्थ है–विवेक चेतना का जागरण।

आचार्यश्री भिक्षु की धर्म क्रांति का पहला कदम आज का यह बोधि दिवस बना है। मुनिश्री ने कहा कि आचार्यश्री भिक्षु का नाम मंत्राक्षर है। आचार्यश्री भिक्षु की शक्ति, श्रद्धा विशिष्ट थी। मुनिश्री ने प्रेरणा के रूप में कहा कि स्वामी जी का जप सबको करना चाहिए। इस अवसर पर मुनि परमानंद जी ने कहा कि आचार्यश्री भिक्षु दृढ़-संकल्प के धनी थे। वे सत्यनिष्ठ एवं संयमनिष्ठ थे। वे शताब्दियों के बाद आज भी जन-जन के श्रद्धा के स्थान बने हुए हैं। इस अवसर पर बाल मुनि कुणाल कुमार जी ने सुमधुर गीत का संगान किया। त्रिदिवसीय ॐ भिक्षु अखंड जप अनुष्ठान एवं १००८ तेला तप अनुष्ठान का भी शुभारंभ हुआ।

उधना

मुनि उदित कुमार जी तेरापंथ भवन में चातुर्मासार्थ विराज रहे हैं। उनके सान्निध्य में तेरापंथ धर्मसंघ के संस्थापक आचार्यश्री भिक्षु के २९८वें जन्म दिवस एवं २६६वें बोधि दिवस मनाया गया।

इस अवसर पर मुनि उदित कुमार जी ने कहा कि आचार्य भिक्षु एक विलक्षण महापुरुष थे। किसी व्यक्ति का जन्म होना यह महत्त्वपूर्ण घटना नहीं है। जन्म और मृत्यु तो प्रत्येक जीव के लिए अवश्यंभावी है। मनुष्य कैसा जीवन जीता है, यह बात महत्त्वपूर्ण होती है। आचार्य भिक्षु का समग्र जीवन साधना की उत्तम गाथा है। उन्होंने अनेक कष्टों को हँसते-हँसते सहन किया। उन्हें कई दिनों तक भोजन-पानी भी नहीं मिला तो तपस्या करते रहे। लेकिन अपने सिद्धांतों से कभी भी विचलित नहीं हुए।

वास्तव में आचार्य भिक्षु महान आलोक पुरुष थे। उन्होंने जो रेखाएँ खींची वे सभी के लिए पथदर्शक बन गई।

मुनिश्री ने आगे कहा कि आचार्य भिक्षु की बुद्धि संपदा एवं तर्कशक्ति भी अद्भुत थी। मुनि अनंत कुमार जी ने कहा कि आचार्य भिक्षु शुद्ध साधुत्व के पालन का आग्रह रखते थे। शिथिलाचार उन्हें पसंद नहीं था। उन्होंने सिद्धांतों के साथ कभी समझौता नहीं किया। वे भगवान महावीर के दर्शन के प्रखर पुरस्कर्ता थे।

अणुव्रत विश्व भारती के गुजरात राज्य प्रभारी अर्जुन मेड़तवाल ने स्वरचित मुक्तकों के साथ प्रासंगिक अभिव्यक्ति की। मंगलाचरण तेममं ने किया। कार्यक्रम का संचालन तेरापंथी सभा के मंत्री सुरेश चपलोत ने किया।

सिटीलाइट

साध्वी त्रिशला कुमारी जी के सान्निध्य में तेरापंथ भवन, सिटीलाइट में तेरापंथ स्थापना दिवस के त्रिदिवसीय कार्यक्रम के अंतर्गत आचार्य भिक्षु जन्म दिवस एवं बोधि दिवस का कार्यक्रम आयोजित हुआ। चातुर्मासिक चतुर्दशी होने से साध्वीवृंद द्वारा मर्यादाओं का वाचन किया। अणुव्रत समिति ग्रेटर सूरत का शपथ ग्रहण समारोह भी आयोजित हुआ।

साध्वी त्रिशला कुमारी जी ने कहा कि भारतीय संस्कृति में चातुर्मास को धर्माराधना के लिए श्रेष्ठ माना गया है। जैन परंपरा में तो वर्षा ऋतु के चतुर्मास का विशेष महत्त्व रहा है। चातुर्मास में ध्यान-साधना, जप-तप आदि द्वारा आत्मा को भावित किया जाता है। चातुर्मास वास्तव में कषायों से मुक्त होने का एवं आत्मा की प्रदक्षिणा करने का अवसर है।

साध्वी संप्रतिप्रभा जी ने पाँच प्रकार के 'प'–परमेष्ठी वंदना, प्रतिक्रमण, प्रायश्चित, प्रत्याख्यान एवं परोपकार की महत्ता प्रतिपादित की।

साध्वी रश्मिप्रभा जी ने सुंदर गीत का संगान किया। साध्वी त्रिशला कुमारी जी ने इस अवसर पर अणुव्रत अभियान को पूज्य गुरुदेव श्री तुलसी का वरदान बताया। अणुविभा उपाध्यक्ष राजेश सुराणा ने अणुव्रत आचार संहिता का वाचन किया एवं उसकी आवश्यकता बताई। निवर्तमान अध्यक्ष विजय कांत खटेड़ ने नव मनोनीत अध्यक्ष विमल लोढ़ा एवं उनकी टीम को केंद्रीय प्रारूप के अनुसार शपथ विधि करवाई। नव मनोनीत अध्यक्ष विमल लोढ़ा ने स्वागत वक्तव्य दिया।

इस अवसर पर अणुव्रत विश्व भारती के गुजरात राज्य प्रभारी अर्जुन मेड़तवाल, अनिल समदड़िया, रमेश डोडावाला, राकेश चोरड़िया आदि भी उपस्थित थे। सूरत तेरापंथ सभा के मैनेजिंग ट्रस्टी बाबूलाल भोगर ने श्रावक निष्ठा पत्र का वाचन किया। मंगलाचरण में अणुव्रत गीत का संगान किया गया। कार्यक्रम का संचालन अणुव्रत समिति के नव मनोनीत मंत्री संजय बोथरा एवं आभार ज्ञापन पूर्व मंत्री सुनील श्रीमाल ने किया।

सिरियारी

मुनि मणीलाल जी स्वामी का मुनि धर्मेश कुमार जी स्वामी के सान्निध्य में आयोजित भिक्षु भक्ति में छोटी उम्र की कलाकार जीविका चोरड़िया ने अपनी प्रस्तुति दी मात्र १२ वर्ष की लघु वय में इतनी अच्छी प्रस्तुति देख के सभा ओम अर्हम् कर उठी।

कार्यक्रम का संचालन राहुल बालड़ ने किया। मुनि हितेंद्र कुमार जी, मुनि धीरज कुमार जी ने भावाभिव्यक्ति दी। व्यवस्थापक मुनि आकाश कुमार जी ने गीत के माध्यम से जनता तक अपनी बात पहुँचाई तथा मुनि धर्मेश कुमार जी ने अपनी रोचक शैली में वीर भिक्षु को व्याख्यायित किया तथा लोगों को प्रेरणा के साथ सात्त्विक संकल्प भी करवाया। बाल कलाकार को मोमेंटो के द्वारा सम्मानित किया। अभातेयुप के सार्थक प्रयास से कार्यक्रम का लाइव प्रसारण हुआ और सुगमता से संचालित भी हो रहा है। विभिन्न राज्यों से करीब ३०० से ज्यादा लोग उपस्थित थे।

अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस के आयोजन

किलपाक, चेन्नई

अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस के अवसर पर अणुव्रत विश्व भारती के तत्त्वावधान में जीवन विज्ञान विभाग द्वारा राष्ट्रीय स्तर पर आयोजित इस योग दिवस पर अणुव्रत समिति, चेन्नई, लायंस क्लब-टावर ट्विस्टर और सी०आर०के०एस० की संयुक्त आयोजना में योगाभ्यास का एक सत्र आयोजित हुआ। चेन्नई महानगर के किलपाक स्थित सेंट जॉर्ज स्कूल में आयोजित इस योगाभ्यास कार्यक्रम का संचालन योग प्रशिक्षक त्यागराज एवं गरिमा पुगलिया ने किया।

कार्यक्रम के प्रथम चरण में महाप्राण ध्वनि का प्रयोग करवाया। इसी क्रम को गति देते हुए विधिपूर्वक यौगिक क्रियाएँ, प्राणायाम सहित अनेक योगासनों के प्रयोग तथा उनके लाभ आदि से प्रशिक्षकों द्वारा अवगत करवाया गया। कार्यक्रम में अच्छी संख्या में लोगों ने भाग लिया। अणुव्रत समिति, चेन्नई अध्यक्ष ललित आंचलिया ने अणुव्रत समिति चेन्नई के इतिहास और समिति की गतिविधियों के बारे में संक्षिप्त जानकारी दी।

कार्यक्रम की आयोजना के लिए सेंटर जॉर्ज स्कूल के प्रति आभार व्यक्त किया। कार्यक्रम में अणुव्रत समिति के कोशाध्यक्ष पंकज चोपड़ा, समिति सदस्य विनोद पुनमिया, निर्मला छल्लाणी, वसंत छल्लानी, ऋषभ आंचलिया आदि की उपस्थिति रही।

हैदराबाद

तेरापंथी सभा, सिकंदराबाद में देवेंद्र कुमार नाहटा के निवास स्थान पर साध्वी डॉ० मंगलप्रज्ञा जी के सान्निध्य में अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस का कार्यक्रम आयोजित किया गया। इस अवसर पर साध्वी मंगलप्रज्ञा जी ने कहा कि भारतीय परंपरा में योग साधना का अत्यधिक महत्त्व है। शक्ति, शांति और आनंद की प्राप्ति के लिए योग का आलंबन काफी कारगर सिद्ध हो रहा है। मुक्ति की साधना में ध्यान का महत्त्वपूर्ण स्थान है। उन्होंने कहा कि तेरापंथ धर्मसंघ के नवमाचार्य गुरुदेवश्री तुलसी के निर्देशानुसार प्रेक्षा प्रणेता आचार्यश्री महाप्रज्ञ जी ने वैज्ञानिक आधारित प्रेक्षाध्यान शिविर का प्रारंभ किया। ध्वनि विज्ञान एक ऐसा सशक्त प्रयोग है, जिससे आसपास का वातावरण विशुद्ध बन जाता है।

उन्होंने कहा कि श्वास प्रेक्षा, कायोत्सर्ग, चैतन्य केंद्र प्रेक्षा आदि अनेक प्रयोगों के द्वारा आधि, व्याधि और उपाधि की समस्या का समाधान निश्चित हो सकता है। विरासत में प्राप्त इस शक्ति का हमें दृढ़-संकल्प के साथ उपयोग करना चाहिए। प्रशिक्षक ललित किशोर, बबीता एवं सीमा सिंह ने योग शिविरार्थियों को अनेक प्रयोग, आसन एवं प्राणायाम करवाए। तेरापंथी सभा, सिकंदराबाद द्वारा प्रशिक्षकों का साहित्य द्वारा सम्मान किया गया। संचेती ने कहा कि हर व्यक्ति को योग के लिए समय जरूर निकालना चाहिए। योग स्वस्थता का सशक्त आधार है।

करें सेवा पाए मेवा

कोयंबटूर।

डॉ० साध्वी गवेषणाश्री जी के सान्निध्य में वृद्धों को चित्त समाधि कैसे दें, इस विषय पर एक विशेष कार्यशाला आयोजित की गई। डॉ० साध्वी गवेषणाश्री जी ने कहा कि व्यक्ति जैसा बीज बोता है, वैसा ही फल पाता है। अपनी आत्मा ही सुख-दुःख का कर्ता है, इसीलिए जो जैसी सेवा करता है, वैसी मेवा उसे प्राप्त होती है। वर्तमान में बूढ़े माँ-बाप को आउट ऑफ डेट माने जाते हैं, वे आउट ऑफ होम में ही सुशोभित हो रहे हैं। उनके पास जो अनुभव का खजाना है सीपियों में मोती की तरह उनके हृदय में आशीर्वाद भी दुआ छिपी हुई है।

साध्वी मयंकप्रभा जी ने कहा कि जीवन तीन भागों में बँटा हुआ है, उसमें तीसरी अवस्था है बुढ़ापा जिसमें अनुभव की संपदा है, ज्ञान की प्रतिष्ठा है और अपनत्व की विशालता है। साध्वी मेरूप्रभा जी ने सुमधुर गीतिका के द्वारा सबको भावविभोर कर दिया।

स्वागत भाषण देवीलाल मांडोत ने किया। साध्वी दक्षप्रभा जी ने भावपूर्ण स्वर से गीतिका प्रस्तुत की। उपासिका सुशीला बाफना ने अपने विचार रखे। राजगुरु ट्रस्ट के अध्यक्ष जीतमल ओबानी ने राजगुरु परिवार की ओर से आभार ज्ञापन किया। इस अवसर पर भाई-बहनों की विशेष उपस्थिति रही।

✦ *श्रावक बारहव्रतों को स्वीकार करें तो कुछ अंशों में संयम जीवन में आ जाएगा।*
– आचार्यश्री महाश्रमण

अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स
24 - 30 जुलाई, 2023

✦ *परिवर्तन के आकर्षण में इतना नहीं बहना चाहिए कि व्यक्ति मूल्यपरक संस्कृति से दूर हो जाए।*

–आचार्यश्री महाश्रमण

अज्ञ से प्रज्ञ, प्रज्ञ से महाप्रज्ञ बनने की रोचक कहानी का नाम आचार्य महाप्रज्ञ

विवेक विहार, दिल्ली।

साध्वी अणिमाश्री जी के सान्निध्य में राम मंदिर के पांगण में आचार्यश्री महाप्रज्ञ जी का जन्म दिवस प्रज्ञा दिवस के रूप में आयोजित हुआ। शाहदरा सभा द्वारा आयोजित 'अभिवंदना प्रज्ञा के महासूर्य की' कार्यक्रम में निगम पार्षद पंकज लूथरा, दिल्ली सभाध्यक्ष सुखराज सेठिया, विकास परिषद् के पूर्व संयोजक मांगीलाल सेठिया तथा राम मंदिर के वरिष्ठ राम भक्तों की उपस्थिति रही।

साध्वी अणिमाश्री जी ने कहा कि आज के दिन टमकोर की रत्नगर्भा वसुंधरा पर एक अलौकिक प्रज्ञा पुरुष का अवतरण हुआ, जिसने अपनी प्रज्ञा रश्मियों से जैन समाज को ही नहीं मानव जाति को आलोकित किया। अज्ञ से प्रज्ञ एवं प्रज्ञ से महाप्रज्ञ बनने की रोचक कहानी का नाम है आचार्यश्री महाप्रज्ञ। महाप्रज्ञवर के गुणों को आत्मसात कर हम उनका जन्म दिवस मनाएँ। यही हमारे जीवन की सार्थकता होगी।

साध्वी कर्णिकाश्री जी ने कहा कि आचार्य महाप्रज्ञ जी महायोगी, महाध्यानी, महासाधक एवं प्रज्ञा के अवतार थे। डॉ० साध्वी सुधाप्रभा जी ने मंच संचालन किया। साध्वी समत्वयशा जी ने सुमधुर गीत का संगान किया। साध्वी मैत्रीप्रभा जी ने कहा कि आचार्य महाप्रज्ञ जी आत्मदृष्टा, भविष्य दृष्टा एवं युगदृष्टा थे।

शाहदरा सभाध्यक्ष पन्नालाल बैद, विद्या भारती स्कूल के सेक्रेटरी आलम अली, कल्पना सेठिया ने अपने भावों की अभिव्यक्ति दी। महिला मंडल के कार्यकाल का सुमधुर स्वर लहरी के साथ मंगल संगान कर वातावरण को मंगलमय बनाया।

'रब ने बना दी जोड़ी' दंपति कार्यशाला का आयोजन

कोयंबटूर।

साध्वी गवेषणाश्री जी के सान्निध्य में दंपति कार्यशाला का आयोजन नक्षत्रा टावर लायंस क्लब में आयोजित किया गया। इस कार्यशाला का विषय था–'रब ने बना दी जोड़ी'। डॉक्टर साध्वी गवेषणाश्री जी ने कहा कि दो अनजान दिनों का साथ दो आत्माओं का मिलन, दो दिलों के सफर का नाम है–दंपति। जिसमें प्रेम है, प्यार है, अपनत्व है, आनंद है, वात्सल्य है, विनम्रता है। इस संबंध को बरकरार रखने के लिए तीन बिंदु अपनाना जरूरी है। लेट गो पति-पत्नी एक-दूसरे की गलती को लेट गो करना सीखें, पति पत्नी के गुणों को हाइलाइट करे, पॉजिटिव इन पॉजिटिव आउट को अपनाओ। छोटी-छोटी बातों से ही जिंदगी में तकरार शुरू होती है, लेकिन समझदारी से भगवान महावीर के अनेकांत को स्वीकार करें।

साध्वी मयंकप्रभा जी ने कहा कि रिश्ता वह होता है, जिसमें शब्द कम समझ ज्यादा होती है। तकरार कम प्यार ज्यादा और आस कम विश्वास ज्यादा होता है। आचार्य धर्म सुरिश्वर जी की शिष्या साध्वी मयूरयशा जी एवं साध्वी चैतन्ययशा जी ने अपने उद्गार व्यक्त किए। साध्वी दक्षप्रभा जी ने गीतिका प्रस्तुत की।

कार्यक्रम की शुरुआत ज्ञानार्थी आर्यन द्वारा की गई। स्वागत भाषण तेयुप अध्यक्ष मनोज बाफना ने किया। नक्षत्रा महिला मंडल ने गीतिका प्रस्तुत की। कोयंबटूर सभा अध्यक्ष उत्तमचंद पुगलिया ने अपने विचार रखे।

उपासिका सुशीला बाफना ने अपनी प्रस्तुति दी। संघ गायक नवीन नाहटा ने सुमधुर स्वर लहरी से उमड़ी जन सैलाब को भावविभोर कर दिया। मंच का संचालन साध्वी मेरूप्रभा जी ने किया। धन्यवाद ज्ञापन रामलाल बुच्चा ने किया। इस दंपति कार्यशाला को सफल बनाने में भंवरलाल मरोठी, मोहनलाल बुच्चा, संपतलाल बाफना, मनोज बाफना, सुभाष बुच्चा, रामलाल बुच्चा, प्रकाश मरोठी आदि की महत्त्वपूर्ण भूमिका रही।

दायित्व हस्तांतरण एवं पदाधिकारी शपथ ग्रहण समारोह

जयपुर।

तेयुप, जयपुर के सत्र-२०२३-२४ के नवनिर्वाचित अध्यक्ष अमित छलानी को विद्याधर नगर स्थित तेरापंथ भवन में मुनि तत्त्वरुचि जी व मुनि संभवकुमार जी के सान्निध्य में निवर्तमान अध्यक्ष सुरेंद्र नाहटा ने पद व गोपनीयता के साथ संघ एवं संघपति के प्रति सदैव समर्पित भाव रखने की शपथ दिलाई।

तेरापंथ सभा, जयपुर अध्यक्ष हिम्मत डोसी, अभातेयुप संगठन मंत्री श्रेयांस कोठारी व शाखा प्रभारी अभिनंदन नाहटा की उपस्थिति में दायित्व हस्तांतरण कर शुभकामनाएँ व्यक्त की। नवनिर्वाचित अध्यक्ष ने अपनी टीम के साथ सेवा-संस्कार-संगठन के त्रिआयामी उद्देश्यों पर चलने के संकल्प पर अपने विचार व्यक्त किए।

उल्लेखनीय है, तेयुप जयपुर के द्वारा सेवा, संस्कार, संगठन के क्षेत्र में अनेक कार्य किए जा रहे हैं, जैसे–श्रमदान, मिड डे मील, रक्तदान शिविर, कैरियर काउंसलिंग, विद्यार्थियों को स्कूल किट का वितरण, महाप्रज्ञ होम्योपैथी चिकित्सालय का संचालन, आचार्य तुलसी डायग्नोस्टिक सेंटर का संचालन, आपात स्थितियों में विशेष सहायता, व्यक्तित्व निर्माण कार्यशालाएँ, पारिवारिक सामंजस्य संगोष्ठी सहित अनेकों गतिविधियों का संचालन किया जा रहा है।

आध्यात्मिक महामंत्र जप अनुष्ठान का गुलदस्ता

आमेट।

साध्वी कीर्तिलता जी की विशेष प्रेरणा से तेरापंथ भवन में आध्यात्मिक जप का कार्यक्रम चल रहा है, जिसमें तेरापंथ सभा, महिला मंडल, तेयुप, कन्या मंडल सबकी सहभागिता उल्लेखनीय है। अष्टमी को ॐ के आकार से उपसर्ग स्तोत्र का सामूहिक जप चला। नवमी को स्वास्तिक के आकार में भक्तामर स्तोत्र का सामूहिक जप रखा गया। दशमी को तेयुप द्वारा पिरामिड के आकार में जैन धर्म का महामंत्र नमस्कार महामंत्र का तन्मयता से जप चला। प्रत्येक दिन अलग-अलग संस्थाओं के प्रतिनिधियों ने अपना दायित्व निभाया।

साध्वी कीर्तिलता जी ने उपसर्ग स्तोत्र का महत्त्व बताया। नमस्कार महामंत्र की महिमा अपरंपार है, जिसने भी इस मंत्र को तन्मयता से केंद्र व रंगों के साथ जप किया। उसका कार्य सिद्ध हुआ है। साध्वीश्री जी ने तेले की तपस्या की प्रेरणा दी। कार्यक्रम में श्रावक समाज की अच्छी उपस्थिति रही।

तेरापंथ स्थापना दिवस

सिवानी (हरियाणा)।

शासनश्री साध्वी कुंथुश्री जी के सान्निध्य में तेरापंथ सभा के तत्त्वावधान में तेरापंथ भवन में २६४वाँ तेरापंथ स्थापना दिवस मनाया गया।

मंगलाचरण साध्वी सुमंगलाश्री जी ने गीत से किया। सभाध्यक्ष रतनलाल जैन ने आचार्य भिक्षु के प्रति भावांजलि अर्पित की।

साध्वी कुंथुश्री जी ने कहा कि आषढ़ शुक्ला पूर्णिमा तेरापंथ धर्मसंघ के लिए महत्त्वपूर्ण दिन है। आज के दिन तेरापंथ को विलक्षण गुरु मिला था, उसका नाम था–आचार्य भिक्षु। आज गुरु पूणिमा है, गुरु का स्थान भगवान से ऊपर बतलाया है। दोनों की तुलना में गुरु का महत्त्व अधिक है। भारतीय संस्कृति में गुरु को सर्वोपरि माना गया है।

आज के दिन तेरापंथ की स्थापना हुई। आचार्य भिक्षु ने कहा कि 'हे प्रभु यह तेरापंथ'। अहंकार और ममकार विसर्जन का नाम तेरापंथ है। आगे आपने तेरापंथ दर्शन सिद्धांत दया-दान आदि का विवेचन किया।

साध्वी सुलभयशा जी एवं साध्वी संबोधयशा जी ने आचार्य भिक्षु के प्रति महत्त्वपूर्ण विचार प्रस्तुत किए। सरिता बंसल, ऋतु बंसल आदि गीत का संगान किया। कन्या मंडल ने एक रोचक लघु नाटिका के द्वारा आचार्य भिक्षु के प्रति अभिव्यक्ति दी। संघगान के द्वारा कार्यक्रम का समापन हुआ।

रात्रि में धम्म जागरणा में संपूर्ण तेरापंथ प्रबोध एवं अन्य सुमधुर गीतिकाओं का संगायन सभी श्रोताओं के लिए आंददायक रहा।

ज्ञानशाला का संस्कार निर्माण शिविर का आयोजन

छोटी खादू।

साध्वी संघप्रभा जी के सान्निध्य में ज्ञानशाला का संस्कार निर्माण शिविर का एक दिवसीय आयोजन किया गया। इसका विषय 'कैसे हो संस्कारी पीढ़ी का निर्माण' रखा गया। कार्यक्रम का प्रारंभ ज्ञानशाला के बच्चों द्वारा अर्हम्-अर्हम् की वंदना से किया गया। साध्वी संघप्रभा जी ने चतुर्दशी का हाजरी का वाचन करते हुए कहा कि विज्ञान और टेक्नोलॉजी के इस युग में मोबाइल, लेपटॉप, कम्प्यूटर जैसे संसाधनों व स्कूली शिक्षा से बच्चों का लाइफ स्टैंडर्ड को कैसे बढ़ाया जा रहा है किंतु जीवन को सफल सार्थक बनाने के लिए जरूरी है जीवन में संस्कारों का निर्माण कैसे हो, इसी क्रम में साध्वी प्रांशुप्रभा जी ने कहा कि ज्ञानशाला संस्कार निर्माण की प्रयोगशाला है। बीईएसटी शब्द से ज्ञानशाला के बच्चों को कैसे श्वांस लेना, कैसे बैठना, कैसे चलना, कैसे खाना, कैसे सोचना आदि क्रियाओं द्वारा कैसे संस्कार निर्माण हो इसी शृंखला में साध्वी प्राज्ञप्रभा जी ने सुमधुर गीतिका से वातावरण को मधुरमय बना दिया। प्रस्तुति के क्रम में सभा अध्यक्ष ताराचंद धारीवाल, सभा मंत्री विकास सेठिया, गुलाब देवी बैद, नवनिर्वाचित अध्यक्ष श्वेता भंडारी, निर्वाचित मंत्री पूजा सेठिया, गर्विता धारीवाल चंदा डूंगरवाल आदि ने अपनी प्रस्तुतियाँ दी।

इसी क्रम में कुसुम बेताला एवं सरोज देवी बेताला (पूर्व अध्यक्ष एवं मंत्री तेमम) ने नव निर्वाचित अध्यक्ष एवं मंत्री को शपथ ग्रहण करवाई। श्वेता भंडारी ने नवनिर्वाचित टीम को शपथ ग्रहण करवाई कार्यक्रम में सैकड़ों श्रावक-श्राविकाओं की उपस्थिति रही। कार्यक्रम का संचालन महिला मंडल सदस्य कुसुम देवी बैद ने किया।

शपथ ग्रहण समारोह का आयोजन

तिरुपुर।

साध्वी गवेषणाश्री जी के सान्निध्य में तेयुप के सत्र-२०२३-२४ के कार्यकाल के नई कार्यसमिति का शपथ ग्रहण समारोह आयोजित हुआ। संस्कारक की भूमिका उपासक संस्कारक हनुमानमल दुगड़, चेतन बरड़िया, जितेंद्र भंसाली एवं प्रेम डाकलिया ने निभाई।

मंगलभावना पत्रक की स्थापना सभा अध्यक्ष अनिल आंचलिया, सुमित भंडारी एवं सोनू डागा ने की। साध्वीश्री जी ने मंगलकामना प्रेषित की।

निवर्तमान अध्यक्ष सुमित भंडारी ने नवनिर्वाचित अध्यक्ष सोनू डागा को शपथ दिलवाई, जिसके पश्चात सोनू ने अपनी टीम की घोषणा कर उनको शपथ दिलवाई। नई टीम को आशीर्वाद मंत्र से साध्वीश्री जी ने वर्धापित किया। कार्यक्रम का संचालन चेतन बरड़िया ने किया।

सब जीवों में होती है चेतना : आचार्यश्री महाश्रमण

नंदनवन (मुंबई), १४ जुलाई, २०२३

शुभ योग साधक आचार्यश्री महाश्रमण जी ने भगवती सूत्र आगम के आठवें शतक की व्याख्या करते हुए फरमाया कि शास्त्रकार ने कहा है कि हर आत्मा में अवबोध-बोध होता है। सिद्ध हो या संस्कारी कोई भी आत्मा ऐसी नहीं हो सकती जो बोध-शून्य हो। चेतना सब जीवों में होती है। सिद्ध तो निरंजन, निराकार, संपूर्ण केवलज्ञान मय होते हैं।

संसारी छोटे से छोटे जीव में अवबोध-चेतना उद्घाटित होती है। मति-श्रुत ज्ञान या मति-श्रुत अज्ञान दोनों में से एक या युगल हर छद्मस्थ जीव में अवश्य होता है। संसारी जीव में ज्ञान चेतना थोड़ी सी भी न रहे तो जीव अजीव हो जाता है। जीव का लक्षण है—उपयोग यानी चेतना का व्यापार। जैन दर्शन में बारह उपयोग बताए गए हैं, उनमें से कुछ-न-कुछ उपयोग तो हर आत्मा में होते हैं।

गौतम स्वामी भगवान से ज्ञान के बारे में प्रश्न पूछते हैं कि भंते! ज्ञान कितने प्रकार के होते हैं। भगवान ने उत्तर दिया—गौतम! ज्ञान पाँच प्रकार के बताए गए हैं—अभिनिबोधित ज्ञान (मति ज्ञान), श्रुत ज्ञान, अवधि ज्ञान, मनः पर्यव ज्ञान और केवल ज्ञान। तीन अज्ञान व चार दर्शन भी होते हैं।

अज्ञान दो प्रकार का होता है—(१) ज्ञान का अभाव (२) मिथ्या दृष्टि का बोध अज्ञान। ज्ञान का अभाव ज्ञानावरणीय कर्म के उदय से जुड़ा है। मिथ्या दृष्टि का बोध ज्ञानावरणीय कर्म के क्षयोपशम से निष्पन्न होने वाला होता है। मति और श्रुत ज्ञान इंद्रिय और मन से जुड़े होते हैं। शेष तीन ज्ञान प्रत्यक्ष होते हैं, जो आत्मा से जुड़े होते हैं।

एक चौथी और मिट्टी के उदाहरण से समझाया कि ज्ञानावरणीय कर्म एक आवरण है, जो हटते ही केवल ज्ञान हो जाता है, जो क्षायिक भाव वाला ज्ञान है। केवल ज्ञान वापस नहीं जा सकता। दूसरे ज्ञान वापस हो सकते हैं। अवधि ज्ञान व मनःपर्यव ज्ञान सीमित हैं, जबकि केवलज्ञान असीमित है। इससे बड़ा और कोई ज्ञान नहीं हो सकता। यह वीतरागता पर आधारित है।

अज्ञान मोह का नाश हो तो सर्व ज्ञान का प्रकाश हो सकता है। जिसे केवल ज्ञान प्राप्त हो जाता है, वह केवल दर्शनी भी हो जाता है। मोहनीय कर्म समाप्त होते ही शेष तीनों घाति कर्म क्षय हो जाते हैं। सर्वज्ञ अनेक जीव हुए हैं। हमारी ज्ञान चेतना विकसित होती रहे, यह काम्य है।

कालू यशोविलास की सुंदर व्याख्या के काम को आगे बढ़ाते हुए परम पावन ने वि०सं० १९९१ जोधपुर चातुर्मास के समय बाल दीक्षा के विरोध के प्रसंग को विस्तार से समझाया। २१ रंगी तपस्या से संलग्न तपस्वियों एवं अन्य तपस्वियों को तपस्या के प्रत्याखान करवाए।

उपासक प्रशिक्षण शिविर का मंचीय कार्यक्रम

वर्तमान में उपासक श्रेणी प्रशिक्षण शिविर चल रहा है। इस बार लगभग ८९ नए संभागी हैं। पूज्यप्रवर ने पावन प्रेरणा प्रदान करते हुए फरमाया कि उपासक श्रेणी परम पूज्य गुरुदेव तुलसी के समय शुरू हुई थी। उनका ही आशीर्वाद है कि ये श्रेणी उत्तरोत्तर विकास कर रही है। उपासना भाग १ व २ पुस्तकें भी उपासक श्रेणी से जुड़ने वालों के लिए उपयोगी हैं। आचार्यश्री महाप्रज्ञ जी का इस श्रेणी को आशीर्वाद प्राप्त हुआ।

उपासक श्रेणी जैन धर्म तेरापंथ शासन से जुड़ी है, अपने संप्रदाय की चीज है। पौधा था जो विस्तार पा रहा है। लगभग २०० से ऊपर ग्रुप पर्युषण यात्रा में जगह-जगह जाकर धर्माराधना का काम करते हैं। स्थानीय स्तर पर भी काम होता रहे। भादुड़ी तेरस जैसे संधीय कार्यक्रमों एवं संथारा लेने वालों को त्याग-प्रत्याख्यान एवं धार्मिक, आध्यात्मिक सहयोग करते रहें। अनेक संदर्भों में ये श्रेणी उपयोगी हो सकती है।

इस श्रेणी को गृहस्थ जीवन के धर्म प्रचारक कह सकते हैं। उपासक श्रेणी के सदस्यों के संस्कार भी अच्छे हों। धर्मसंघ की रीति-नीति की जानकारी भी रहे। अभी नए उपासक बनने वालों का शिविर लगा है। शिविर के बाद भी लक्ष्य रहे कि ज्ञान बढ़ता रहे, विकास होता रहे।

उपासक श्रेणी के राष्ट्रीय संयोजक सूर्यप्रकाश सामसुखा ने इस श्रेणी के महत्त्व को समझाते हुए कहा कि उपासक श्रेणी एक ऐसा माध्यम है, जो व्यक्ति की आत्मा का ऊर्ध्वारोहण करने वाली है। पूर्व राष्ट्रीय संयोजक सुमेरमल सुराणा ने कहा कि उपासक श्रेणी में सादगी और संयम का विकास हो। शिविरार्थी तरुण गुंदेचा एवं रीतु आहूजा ने शिविर के अनुभव बताए।

नवी मुंबई जीतो के महामंत्री रोशनलाल बड़ाला ने कहा कि आचार्यश्री महाश्रमण जी जैन एकता के एक उदाहरण स्वरूप हैं।

उपासक प्राध्यापक डालिमचंद नौलखा आदि उपासकों ने पुस्तक 'उपासक श्रेणी प्रगति विवरण' श्रीचरणों में अर्पित की। पूज्यप्रवर ने आशीर्वाद फरमाया।

कार्यक्रम का संचालन करते हुए मुनि दिनेश कुमार जी ने श्रावक संबोध के माध्यम से नव तत्त्वों को विस्तार से समझाया।

बच्चों के निर्माण के लिए मंत्र दीक्षा जरूरी है

कृष्णा नगर, दिल्ली।

उग्रविहारी तपोमूर्ति मुनि कमल कुमार जी स्वामी के सान्निध्य में मंत्र दीक्षा का कार्यक्रम आयोजित किया गया। मुनिश्री ने कहा कि बच्चे हमारे परिवार, समाज, धर्मसंघ की निधि है। इनकी सुरक्षा बहुत आवश्यक है। अगर बच्चे संस्कारी होंगे तो केवल बच्चों का ही नहीं परिवार, समाज और धर्मसंघ का भी भविष्य उज्ज्वल बनेगा। पुराने जमाने में दादा-दादी, नाना-नानी बच्चों को नमस्कार महामंत्र वंदन पाठ, मंगल पाठ आचार्यों, तीर्थंकरों के नाम पक्का करा देते, उन्हें कहानियों के माध्यम से धार्मिक संस्कार देते, परंतु आज इस में कमी आई है। पूज्य गुरुदेव आचार्यश्री तुलसी ने देखा कि आज-कल बच्चों में संस्कारों का आभाव होता जा रहा है। उनकी कृपा से ज्ञानशाला का क्रम बन पाया जो आज सुव्यवस्थित रूप बनकर आया है। उसमें आचार्यों, साधु-साध्वियों, समणियों के साथ ज्ञानशाला प्रशिक्षिकाओं की महत्त्वपूर्ण भूमिका है, जो बच्चों के निर्माण के लिए सदैव तत्पर रहती हैं।

आचार्यश्री महाश्रमण जी का ज्ञानशालाओं पर विशेष ध्यान रहता है। समय-समय पर ज्ञानार्थियों को समय देकर उन्हें प्रोत्साहित भी करते रहते हैं। कृष्णा नगर के ज्ञानार्थी कई दीक्षार्थी बने हैं, यह क्रम निरंतर चलता रहे, जिससे धर्मसंघ दीर्घ जीवी बना रहे।

कार्यक्रम के प्रारंभ में संदीप पुगलिया, शिवं छल्लाणी ने विजय गीत का संगान किया। ज्ञानशाला के सह-संयोजक पारस तातेड़, तेयुप के सहमंत्री शिवं छल्लाणी ने अपने विचार प्रकट किए। मुनिश्री ने बालक-बालिकाओं को मंत्र दीक्षा प्रदान की। कार्यक्रम में देवेंद्र पुगलिया ने नव की तपस्या का प्रत्याख्यान किया। दो बहनों ने गुप्त अठाई का एक भाई ने गुप्त पंचोले का प्रत्याख्यान किया। मुनि नमि कुमार जी ने २६ की तपस्या का प्रत्याख्यान किया।

एटीडीसी के तीसरे कलेक्शन सेंटर का उद्घाटन

डोंबिवली।

डोंबिवली में आचार्य तुलसी डायग्नोस्टिक सेंटर का तीसरे कलेक्शन सेंटर का उद्घाटन जैन संस्कार विधि से हुआ। संस्कारक दिनेश चोरड़िया और कमलेश दुगड़ ने संपूर्ण विधि-विधान द्वारा नमस्कार महामंत्र व मंगल मंत्रों के उच्चारण से संपादित करवाया।

उद्घाटनकर्ता सभा मंत्री एवं मुख्य ट्रस्टी जगदीश परमार, प्रकाश कच्छारा, धर्मचंद बड़ाला, शांतिलाल कोठारी के साथ तेयुप अध्यक्ष ललित मेहता, मंत्री राहुल कोठारी, डॉ० पंकज सिंघवी के हाथों से शुभारंभ हुआ।

तेयुप अध्यक्ष ललित मेहता ने सभी का स्वागत किया। इस अवसर पर भरत कोठारी, राजेंद्र कच्छारा, अमन सोनी, मनोज मादरेचा, देवेंद्र मेहता, प्रतीक चपलोत, खुशबू परमार, जीवन सिंघवी, महावीर सिंघवी, भरत धाकड़, नीता ओस्वाल का विशेष श्रम रहा।

सभी गणमान्य ट्रस्टीगण, मुंबई कन्या मंडल प्रभारी जुली मेहता व तेयुप के सभी कार्यकारिणी सदस्य, फोर्टिस हॉस्पिटल से न्यूरोसर्जन, डॉ० प्रकाश संकपाल डोंबिवली से डेंटिस्ट हर्षदा भोइद की उपस्थिति रही।

कार्यक्रम का संचालन संयोजक मनीष धींग ने किया व इनका विशेष श्रम रहा। आभार तेयुप मंत्री राहुल कोठारी ने किया।

मन में नीति साफ तो सौ पाप...

(पृष्ठ १२ का शेष)

साध्वीवर्या सम्बुद्धयशा जी ने कहा कि सत्य लोक में सारभूत है। दुनिया में सत्य धर्म का अस्तित्व है, तो असत्य धर्म का भी अस्तित्व है। मृषावाद एक पाप है। मृषावाद से बचने के लिए झूठा संभाषण भी न करें। सत्य भी विवेकपूर्ण बोलना चाहिए। कटु सत्य न बोलें। किसी का भेद न खोलें। असत्य संभाषण करने वाला अपना विश्वास खो देता है। अनेक अवगुण आ सकते हैं। अप्रिय सत्य न बोलें। असत्य बोलने वाला अल्पायु का बंध कर सकता है।

अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स
24 - 30 जुलाई, 2023

✦ *सम्मान मिलना एक उपहार होता है और किसी दृष्टि से वह भार भी होता है।*

—आचार्यश्री महाश्रमण

धर्मसंघ का महत्त्वपूर्ण आयाम है – उपासक श्रेणी
यह सबके लिए त्राण और शरण बनें : आचार्यश्री महाश्रमण

नंदनवन (मुंबई), १७ जुलाई, २०२३

महातपस्वी, महामनस्वी, युगप्रधान आचार्यश्री महाश्रमण जी के सान्निध्य में श्री जैन श्वेतांबर तेरापंथी महासभा के तत्त्वावधान में आयोजित त्रिदिवसीय उपासक सेमिनार के समापन दिवस पर आचार्यश्री महाश्रमण जी ने फरमाया कि भारतीय संस्कृति त्याग की संस्कृति है। यहाँ दान और दया को धर्म का महत्त्वपूर्ण अंग माना गया है। जैन दर्शन में भी दान और दया को अत्यंत महत्त्वपूर्ण स्थान प्राप्त है। दान हर किसी को हर कहीं, दिया नहीं जा सकता। दान के संबंध में तीन बातों का विशेष उल्लेख जैन ग्रंथों-आगमों में किया गया है, वे हैं–चित्त, वित्त और पात्र। चित्त का मतलब है–दान देने वाला शुद्ध भावों से दान दे। वित्त से तात्पर्य है–जिस वस्तु का दान देना है वह वस्तु शुद्ध हो। पात्र का अर्थ है दान ग्रहण करने वाला व्यक्ति सुपात्र हो। जैन दर्शन में सुपात्र उसे कहा गया है, जिसने संयम की आराधना स्वीकार की हो–जो पाँच महाव्रत, पाँच समिति और तीन गुप्ति का पालन करने वाला हो अर्थात् शुद्ध साधु हो। सुपात्र व्यक्ति अर्थात् चरित्र आत्मा को शुद्ध वस्तु का दान यदि शुद्ध भावों के साथ दिया गया हो तो वह अवश्य फलदायी होता है। उससे कर्मों की निर्जरा होती है और पुण्य का बंध होता है।

उपासक सेमिनार में उपस्थित संभागियों को प्रेरणा पाथेय प्रदान करते हुए आचार्यप्रवर ने फरमाया कि उपासक श्रेणी तेरापंथ धर्मसंघ का एक महत्त्वपूर्ण आयाम है। उपासक श्रेणी, शिविर और सेमिनार एक समवाय सा हो गया है। शिविर और सेमिनार के माध्यम से उपासकों का अच्छा स्वाध्याय हो जाता है। ये प्रशिक्षण के माध्यम से, आध्यात्मिक प्रशिक्षण से संस्कार सिंचन और संवर्धन भी हो सकता है। तेरापंथी महासभा के तत्त्वावधान में संचालित यह आयाम गुणवत्तायुक्त है। इससे मानो संघ के रथ को गति मिल रही है। यह बहुत संतोष की बात है। पूज्य आचार्यश्री महाप्रज्ञ जी ने उपासकों की १०० की संख्या हो ऐसा सपना संजोया था। वर्तमान में पढ़े-लिखे लोग–डॉक्टर, इंजीनियर, सी०ए० आदि भी इस श्रेणी से जुड़ रहे हैं। यह सब बातें उज्ज्वल भविष्य की द्योतक हैं। उपासक-उपासिकाएँ अपने लक्ष्य में आगे बढ़ते रहें, यह श्रेणी सबके लिए त्राण, शरण बनें और कल्याणकारी सिद्ध हों यही शुभाशंषा है।

पूज्यप्रवर ने 'शांतिलाल बोराणा (बैंगलोर) स्मृति ग्रंथ' का विमोचन किया। परिवारजनों ने ग्रंथ पूज्यप्रवर के चरणों में समर्पित किया। पूज्यप्रवर ने 'कालूयशोविलास' पर मारवाड़ी भाषा में रोचक व्याख्यान दिया। वरिष्ठ उपासक सुमेरमल सुराणा ने अष्टमाचार्य पूज्य कालूगणी के जीवन से जुड़ी घटनाओं की प्रस्तुति दी। कार्यक्रम में उपासक गीत की सुंदर प्रस्तुति हुई। सभी उपासक-उपासिकाओं ने अपने-अपने स्थान पर खड़े होकर उपासक गीत की आह्लादपूर्ण एवं प्रभावी संगान किया।

शिविर व्यवस्थापक उपासक जयंतीलाल सुराणा ने अपने श्रद्धासिक्त भावों की गुरुचरणों में प्रस्तुति दी। उपासक श्रेणी के आध्यात्मिक पर्यवेक्षक मुनि योगेश कुमार जी ने उपासक श्रेणी की विकास यात्रा का आधुनिक संदर्भ के साथ विश्लेषण किया।

मन में नीति साफ तो सौ पाप माफ : आचार्यश्री महाश्रमण

नंदनवन (मुंबई), १८ जुलाई, २०२३

वीर प्रभु के परम उपासक आचार्यश्री महाश्रमण जी ने अमृत वर्षा करते हुए फरमाया कि भगवती सूत्र के आठवें शतक में एक बात बताई गई है, प्रायश्चित व आराधक और विराधक के संबंध में। एक साधु गृहस्थ के घर गोचरी के लिए गया और वहाँ पर अप्रत्याशित बड़ी गलती हो गई। उसकी भावना थी कि यहाँ छोटी आलोयणा ले लेता हूँ। ठिकाने जाकर बड़ी आलोयणा स्थविर मुनि से ग्रहण कर लूँगा।

इसकी विस्तृत व्याख्या करते हुए पूज्यप्रवर ने आगे फरमाया कि काम शुरू हो गया तो वह काम हो गया। यहाँ पर भी मुनि संकल्प लेकर चले थे। पर परिस्थिति के कारण आलोयणा नहीं ले पाए तो भी वे आराधक हैं। उनकी शुद्धता मानी गई है। उनका रास्ता साफ है। ज्ञान, दर्शन और चारित्र व इहलोक का आराधक होता है। गलती हो सकती है, पर उसका प्रायश्चित करो। जैसे कीचड़ लगे कपड़े को साबुन से साफ कर धो डालते हैं।

आराधक और विराधक दो शब्द हैं। साधु आराधक रहें। यह प्रतिक्रमण दोनों समय उसी के लिए है। बच्चे की तरह सरल बनकर आलोयणा ले लें। जो ऋजुभूत है, उसकी शुद्धि हो सकती है। सरलता में कमी है, तो शुद्धता में कमी हो सकती है। गुरु से दोष मत छिपाओ। गुरु जो आलोयणा दें सहर्ष स्वीकार कर उसे जल्दी पूरा करो। तभी शुद्धि अंतर्मन से हो सकती है, आराधक बन सकते हैं।

प्रायश्चित और प्रतिक्रमण ये दो ऐसे उपाय हैं, जिनसे शुद्धि हो सकती है। मन में नीति साफ है, तो सौ गुनाह माफ हैं। यह आराधक की बात बताई गई है।

महामनीषी ने कालू यशोविलास का सुंदर विवेचन करते हुए परम पूज्य कालूगणी के सुधरी (बगड़ी) पधारने के प्रसंग को विस्तार से समझाया। दीक्षा महोत्सव और मर्यादा महोत्सव को भी पूज्य कालूगणी ने सुधरी में किया था। यह वही बगड़ी है जहाँ हमारे आद्यप्रवर्तक को एक दिन यहाँ न आहार मिला था न रहने को स्थान। जैतसिंहजी की छत्रों में रात्रि प्रवास इसी बगड़ी में हुआ था। मेवाड़ के लोग दर्शन कर मेवाड़ पधारने की अर्ज करते हैं कि माली के बिना बाड़ी सूख न जाए।

पूज्यप्रवर ने २१ रंगी से जुड़े तपस्वियों व अन्य तपस्वियों को तपस्या के प्रत्याख्यान करवाए। **(शेष पृष्ठ ११ पर)**

अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद् के लिए मुद्रक, प्रकाशक एवं संपादक - **पंकज कुमार डागा** द्वारा मै. जी.के. फाइन आर्ट प्रेस, सी-1, एफआईएफ, पटपड़गंज, औद्योगिक क्षेत्र, दिल्ली-110092 से मुद्रित तथा 210, दीनदयाल उपाध्याय मार्ग, नई दिल्ली - 110 002 से प्रकाशित। कार्यकारी संपादक : **दिनेश मरोठी**